अनुलग्नक

पद्धतियाँ एवं लेखों पर टिप्पणियां

एनएएस की संचयन पद्धतियां राष्ट्रीय लेखा के संयुक्त राष्ट्रीय प्रणाली, 1993 का (एसएनए 1993) विस्तार से अनुकरण करती है, जिसका प्रकाशन संयुक्त रूप से पांच अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, जैसे- संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) तथा आर्थिक सहयोग व विकास संगठन (ओईसीडी) तथा यूरोपीय संघ के द्वारा किया जाता है। राष्ट्रीय लेखा प्रणाली 2008 की सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिए जो प्रयास किए गए थे वह एसएनए 1993 का नवीकृत संस्करण है जिसका काफी हद तक डाटा उपलब्ध है।

1.2 हालांकि एसएनए सभी संस्थानिक क्षेत्रों (गैर-वित्तीय निगम, वित्तीय निगम, आम सरकार, पारिवारिक कार्यकर्ता तथा गैर-लाभकारी संस्थान (एनपीआईएसएच)) के लिए लेखा अनुक्रम (मौजूदा लेखा, संचयन लेखा तथा बैलेंस शीट) के संचयन की सिफारिश करती है, ऐसे में ऐसा संभव है कि उपलब्ध डाटा के आधार पर केवल निम्न लेखों तथा कुल योग का निर्माण होः-

i. कुल अर्थव्यवस्था के लिए, लेखों का अनुक्रम (मौजूदा लेखा, केवल संचयन पूंजी लेखा, वित्त लेखा तथा शेष विश्व का लेखा)

ii. कुल अर्थव्यवस्था के लिए सामाजिक लेखाकरण मैट्रिक्स जो एकल मैट्रिक्स में सभी लेखे प्रदर्शित करती है।

iii. संस्थानिक क्षेत्रों के लिए (आम सरकार, एक सेक्टर में समाहित एनपीआईएसएच तथा पारिवारिक क्षेत्र, वित्तीय निगम, गैर वित्तीय निगम) केवल आय सृजन लेखा तथा उत्पादन (मौजूदा लेखों के) ।

iv. आम सरकार तथा पारिवारिक सेक्टर (एनपीआईएसएच सहित) के लिए वित्तीय लेखा तक लेखों का अनुक्रम

v. बुनियादी कीमतों पर सकल अवक्षय उत्पाद

vi. उद्योग द्वारा शामिल उत्पादन तथा मूल्य परिवर्धन का परस्पर वर्गीकरण

vii. उद्योग तथा संस्थानों द्वारा शामिल मूल्य परिवर्धन का परस्पर वर्गीकरण

viii. सरकार के कार्यों का वर्गीकरण

ix. उद्देश्य के आधार पर वैयक्तिक अवक्षय का वर्गीकरण

2. राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एसएनए)

2.2 एसएनए समष्टि आर्थिक लेखों का समुच्चय है जो देश के अर्थव्यवस्था का व्यापक दृष्टिकोण मुहैया कराता है। बैलेंस शीट तथा सारणियों में अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली दर्ज़ की जाती है, यह टुकड़ों में संगठित तथा संगतपूर्ण होती है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत अवधारणाएं, परिभाषाएं तथा वर्गीकरण व लेखाकरण नियम शामिल हैं। यह वृहत है क्योंकि एक ढ़ांचे के रूप में यह आर्थिक सिद्धांतों तथा स्वरूपों के आधार पर संगठित आर्थिक डाटा पर सामंजस्य स्थापित कर सकता है कि किस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों तथा उनके संबंधों द्वारा आर्थिक क्रियाकलापों का पालन किया जाए। यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के साथ उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का निराकरण करने के लिए पर्याप्त अवधारणात्मक ढ़ांचा मुहैया कराता है। एक एकीकृत प्रणाली के रूप में एसएनए सभी लेखों तथा उपलेखों से हटकर यथावत अवधारणाओं, परिभाषाओं तथा वर्गीकरण को आवेदित करता है। लेखे विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर प्रस्तुत किए जाते हैं, जैसे- स्टॉक, प्रवाह, संस्थानिक इकाईयां, अवस्थापना इकाईयां, विपणन उत्पादन तथा स्व-अंतिम उपयोग हेतु उत्पादन तथा अन्य गैर विपणन उत्पादन, अवक्षय व्यय तथा मूल अवक्षय, जिसकी परिभाषाएं तथा वर्गीकरण एक विवेकजन्य ढ़ांचे से जुड़ी हुई है। एसएनए भी आंतरिक रूप से संगत है, जिसका तात्पर्य है कि प्रत्येक आर्थिक प्रवाह अथवा स्टॉक को समान अवधारणाओं व परिभाषाओं का इस्तेमाल करते हुए तथा साथ ही प्रणाली में सभी प्रविष्टियों हेतु लेखाकरण नियमों के एकल समुच्चय का उपयोग करते हुए शामिल किए गए ईकाइयों के लिए मापा जाता जाता है।

2.3 राष्ट्रीय लेखा प्रणाली 2008 के पास एसएनए 1993 का बुनियादी ढांचा है। हालांकि एसएनए 2008 अर्थव्यवस्था के नए पहलुओं को प्रकाश में लाती हैं तथा इस प्रकार आर्थिक पर्यावरण के विकास के साथ इस दिशा में लेखा भी मुहैया कराती है और कार्यात्मक अनुसंधान व उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं हेतु अग्रसर होती है। ऐसा पहले गौर किया गया है कि एसएनए 2008 की सिफारिशें उपलब्ध डाटा को संवर्धित करने के लिए क्रियान्वित की गई है। जब से एसएनए उत्पादन विश्लेषण के विपरीत मुद्दों पर प्रतिक्रिया देन के लिए आशान्वित है, तब से लेखे केवल उत्पादन प्रक्रिया को ही संवर्धित करने के लिए ही विस्तारित नहीं किए गए हैं बल्कि विभिन्न संस्थानिक क्षेत्रों (पारिवारिक सरकार तथा एनपीआईएसएच) से उत्पादित होने वाले आय को सुनिश्चित करने के लिए भी विस्तारित है। ये विभिन्न संस्थानिक क्षेत्र- उत्पादन कारक, स्थानांतरण के माध्यम से पुनःवितरण प्रक्रियाएं तथा स्टॉक हेतु आर्थिक प्रवाह से संबंध आदि हैं। एसएनए की एक महत्वपूर्ण विशेषता संस्थानिक क्षेत्रायामों पर जोर देना है जो उपयोगकर्ताओं को उनके व्यवहार को जानने की अनुमति देता है कि प्रत्येक क्षेत्र में संक्रियाएं किस प्रकार उन अन्य क्षेत्रों के साथ रू-ब-रू होती हैं। इस प्रकार आवश्यकता इस बात कि है न केवल डाटा का

अवस्थापनाओं पर संकलन हो बल्कि उद्योगों के रूप में उनका समूहीकरण तथा साथ ही संस्थानिक इकाईयों का भी सामूहीकरण हों।

2.4 एसएनए की अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं हैः

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) का प्रतिस्थापन सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) द्वारा किया जाता है। मौजूदा आय तथा परिव्यय लेखा को आय लेखा के प्राथमिक व द्वितीयक वितरण के परिचय तथा आय लेखा के उपयोग द्वारा व्यक्त किया जाता हैं।
- गैर कॉरपोरेट संस्थानों हेतु उद्यमों के लिए **संयुक्त आय** की अवधारणा प्रस्तुत की जाती है तथा साथ ही उनके लिए बाजार उत्पादन व अन्य गैर-विपणन उत्पादन तथा अनंतिम अवक्षय मुहैया कराया गया है।
- कानूनी तौर पर क्रियाकलापों के उत्पादन सीमा में समावेश अवैधानिक है।
- अप्रत्यक्ष रूप से वित्तीय मध्यवर्ती सेवाओं के उपचार/आवंटन (एफआईएसआईएम) का आकलन किया जाता है तथा अन्य अभ्यारोपित उत्पादनों की पर्याप्त रूप से व्याख्या की जाती है।
- संचयन लेखा में निम्न शामिल हैः- पूंजी लेखा, वित्तीय लेखा, परिसंपत्ति लेखा में अन्य परिवर्तन तथा पुनः मूल्यीकरण लेखा, इन लेखों में दर्ज़ किए गए प्रवाह का मौजूदा स्पष्ट रूप तथा किस प्रकार बैलेंस शीट पर स्टॉक को अंतिम रूप दिया जाता है आदि।

<u>लेखों का अनुक्रम</u>

2.5 एसएनए में सुझावित लेखा अनुक्रम को तीन उपलेखों में समूहबद्ध किया गया है, (1.) मौजूदा लेखा, (2.) संचयन लेखा तथा (3.) बैलेंस शीट। मौजूदा लेखा रिकॉर्ड (क.) माल तथा सेवाओं का उत्पादन तथा (ख.) आय उत्पत्ति, वितरण तथा उपयोग। संचयन लेखा परिसंपत्तियों में परिवर्तन, निवल आय की जबावदेही पर लेन-देन करता है। बैलेंस शीट परिसंपत्तियों का स्टॉक, जबावदेही तथा निवल आय प्रदर्शित करता है।

2.6 एसएनए मापन के उद्देश्य से प्रविष्टियों का स्थानांतरण करने तथा लेन-देन को रूपांतरित करने हेतु लेखों का उपयोग करता है। एक लेखे के दो छोर होते हैं और एसएनए संसाधन शब्दावली का उपयोग मौजूदा लेखा के उचित छोर के लिए करता है जहां संचालन क्षेत्र अथवा इकाई के मूल्य को संयोजित करते हैं। लेखा का वाम छोर, संचालन से संबंधित है जो इकाई अथवा क्षेत्र के मूल्य को कम करती है, इसका उपयोग के आधार पर नाम पड़ा। उदाहरणस्वरूप, मजदूरी पारिवारिक संसाधन है जो इसे प्राप्त करती है तथा यह वित्तीय अथवा गैर-वित्तीय क्षेत्रों के लिए उपयोग होता है, जो इसकी अदायगी करती है। संचयन लेखों तथा बैलेंस शीटों के लिए लेखा का उचित छोर अदायगी में

परिवर्तन कहा जाता है तथा निवल मूल्य और उसके वाम छोर को परिसंपत्तियों में हुआ परिवर्तन कहा जाता है। वित्तीय लेन-देन के लिए अदायगियों में परिवर्तन, निवल ऋण तथा परिसंपत्तियों में परिवर्तन तथा वित्तीय परिसंपत्तियों के निवल अधिग्रहण आदि को दर्ज किया जाता है। कुल अर्थव्यवस्था के लिए अनुक्रम लेखा के एक अंग के रूप में, लेखा का अनुगामी समुच्चय 2004-05 से 2011-12 की अवधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

- माल एवं सेवा लेखा
- उत्पादन लेखा
- आय उत्पत्ति लेखा
- प्राथमिक आय आवंटन का लेखा
- द्वितीयक आय वितरण का लेखा
- आय लेखा का उपयोग
- पूंजी लेखा
- वित्तीय लेखा

माल तथा सेवा लेखा

2.7 माल तथा सेवा लेखा (लेखा 0) अर्थव्यवस्था के लिए समग्र रूप से प्रदर्शित करता है, (1) कुल संसाधन (उत्पादन एवं आयात) तथा (2) माल तथा सेवाओं का उपयोग (मध्यवर्ती अवक्षय, अनंतिम अवक्षय व्यय, सकल अचल पूंजी निर्माण, माल सूचियों में परिवर्तन, कीमतों वस्तुओं तथा निर्यात की गई वस्तुओं का कम अधिग्रहण)। इस लेखा के संसाधन हिस्से पर न्यून छूटों के साथ उत्पादों पर कर शामिल हैं। यह लेखा इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सभी प्रयोगों एवं संसाधनों के मध्य वैश्विक स्तर पर इसे संतुलित किया जाता है। सभी प्रयोगों एवं संसाधनों के मध्य संतुलन बनाए रखने के लिए अंत में विसंगति दिखाई गई है। यह लेखा उत्पादन तथा व्यय उपागमों से प्राप्त जीडीपी मुहैया कराता है।

उत्पादन लेखा

2.8 उत्पादन लेखा सभी आर्थिक उत्पादन (यह एसएनए द्वारा परिभाषित है, जैसे- सभी कार्यकलाप एक संस्थानिक इकाई के रूप में नियंत्रण तथा जबावदेही से किए जाते हैं जो श्रम, पूंजी तथा माल के इनपुटों का उपयोग करता है, तथा माल एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु सेवाएं मुहैया कराता है) को दर्ज़ करता है। बिना किसी मानव संबद्धता के एक शुद्ध प्राकृतिक पद्धति को आर्थिक अर्थ में उत्पादन कहते हैं जैसे- अतंर्राष्ट्रीय जल में मत्स्य स्टॉक में वृद्धि। यह लेखा स्थापन और संस्थानिक इकाईयों के लिए संकलित किया जाता है। बेहतर उत्पादन विश्लेषण के लिए उत्पादन

लेखा तीन प्रकार के उत्पादनों के मध्य विभेद करता हैः विपणन उत्पादन, स्व-अनंतिम उपयोग तथा अन्य गैर- विपणन उत्पादन। संतुलित मध्य (मूल्य संवर्धित) उत्पादन से मध्यवर्ती अवक्षय घटाकर प्राप्त किया जाता है। कुल अर्थव्यवस्था के लिए सकल पारिवारिक उत्पाद (जीडीपी) संस्थानिक क्षेत्रों की मूल्य संवर्धित राशि के समकक्ष होती है। यदि उत्पादन बुनियादी कीमतों पर होता है तब कर रहित छूट को बाजार की कीमतों पर जीडीपी प्राप्त करने के लिए मूल्य संवर्धित राशि में जोड़ दिया जाता है। इस लेखा में दिखाई देने वाले विभिन्न मदों की अवधारणाओं की व्याख्या नीचे की गई है।

2.9 उत्पादन उन मालों तथा सेवाओं में होता है जो एक अवस्थापना के अंतर्गत उत्पन्न किए जाते हैं तथा जो बाहरी उपयोग के लिए उपलब्ध कराए गए हैं, वह अवस्थापना लाभ किसी माल अथवा सेवाओं को स्व-उपयोग करने में मिलता है। जब कोई एक उद्यम एक से अधिक अवस्थापना बन जाता है, तब उद्यम का उत्पादन कारक अवस्थापनाओं की उत्पादन की राशि होती है। उत्पादन का मूल्य आंकने के लिए बुनियादी कीमत ही पसंदीदा प्रक्रिया है, हालांकि जब बुनियादी कीमत पर मूल्य निर्धारण करना साध्य नहीं होता तब उत्पादक कीमत को ही विकल्प के रूप में उपयोग किया जाता है। इन दोनों कीमतों के बीच का अंतर उत्पादों पर कम सहायिकी के साथ कर का उपचार है। बुनियादी कीमत उत्पाद पर लगने वाले कर के पहले की कीमत होती है, जिसका योग कर दिया जाता है तथा छूट को उत्पाद में घटा दिया जाता है। इसमें यातायात अधिभार शामिल न होकर उत्पादक द्वारा अलग से बीजकन किया जाता है। उत्पादक की कीमत में मूल्य संवर्धित कर (वैट) के अलावा उत्पादों पर कम छूट के साथ कर बुनियादी कीमत पर शामिल होती है। इसके अंतर्गत उत्पादक द्वारा अलग से यातायात अधिभारों का बीजकन भी शामिल किया जाता है।

2.10 मध्यस्थ अवक्षय माल तथा सेवाओं का मूल्य होता है जो उत्पादन प्रक्रिया में इनपुट के रूप में अवक्षय किया जाता है। इनपुट उस समय दर्ज किए जाते हैं, जब माल तथा सेवाएं उत्पादन में प्रवेश करती है, यह समय से पृथक उत्पादक द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। खरीददारी किए गए सामग्रियों तथा आपूर्तियों की माल सूचियों में परिवर्तन योगरहित निकासी के समकक्ष होता है। इनका मूल्यांकन लेन-देन के समय की गई खरीददारी की कीमतों के समय किया जाता है।

2.11 स्थायी पूंजी अवक्षय (सीएफसी) उत्पादन की लागत है। स्थायी पूंजी के स्टॉक के मौजूदा कीमत में लेखाकरण अवधि के दौरान यह क्षय होता है तथा साथ ही यह भौतिक क्षय सामान्य किशोरावस्था तथा सामान्य दुर्घटना क्षति के परिणामस्वरूप उत्पादक द्वारा उपयोग किए जाते हैं। इसमें युद्ध अथवा प्राकृतिक आपदाओं द्वारा नष्ट की गई स्थायी परिसंपत्तियों का मूल्य शामिल नहीं होता। उत्पादन लेखा में अन्य प्रविष्टियों के साथ एकरूपता लाने के लिए, मौजूदा कीमतों के संपूर्ण समुच्चय के संदर्भ में सीएफसी का मूल्य आंका जाता है जिसका उपयोग मूल्य उत्पादन तथा

मध्यवर्ती अवक्षय के लिए किया जाता है। इसलिए इसकी गणना मूल अथवा आकलित कीमतों पर की जाती है ना कि ऐतिहासिक लागतों पर, जैसे मूल रूप से कीमतों की अदायगी होती है।

2.12 सकल संवर्धित मूल्य उत्पादन का नकली मापदंड है जो मध्यवर्ती अवक्षय के मूल्य को उत्पादन से घटाकर प्राप्त किया जाता है।

आय उत्पत्ति लेखा

2.13 यह लेखा दो उपलेखों में पहला है जो प्राथमिक आय के वितरण के पहले चरण को रिकॉर्ड करता है (प्राथमिक आय वे आय होती हैं जो उत्पादन प्रक्रियाओं अथवा परिसंपत्तियों के स्वामित्व जिसका उपयोग उत्पादन में किया जा सकता है में संस्थानिक इकाईयों की मौजूदगी के परिणामस्वरूप उत्पादन के उद्देश्यों के लिए आवश्यक होती है। उत्पादन द्वारा सृजित मूल्य संवर्धन से परे अदायगी योग्य होते हैं। प्राथमिक आय उधार अथवा किराए पर दिए गए वित्तीय अथवा मूर्त गैर- उत्पादित परिसंपत्तियां द्वारा उपार्जित की जाती है जिसमें जमीन, उत्पादन में प्रयोगार्थ अन्य इकाईयों का वितरण संपत्ति आय के रूप में शामिल होता है)। उत्पादकों की नजर में यह लेखा प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार करों के हिसाब से (कम सहायिकी के साथ) मूल्य संवर्धन का वितरण श्रम कारकों व पूंजी तथा सरकार को किया जाता है। मूल्य संवर्धन एक संतुलनकारी मद है जिसे उत्पादन लेखा से प्राप्त किया जाता है। यह उत्पादक के लिए एक संसाधन के रूप में काम में लाया जाता है। उपयोग करते समय श्रमिक का वेतन कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (सीई) तथा कम सहायिकी के साथ उत्पादन पर करों में सरकार द्वारा छूट तथा निर्यात दर्ज़ किया जाता है। इस लेखे में संतुलनकारी मद लाभ/संयुक्त आय को संचालित कर रहा है। उत्पादन लेखे के मामले में यह लेखा उद्योगों तथा संस्थानिक क्षेत्रों के द्वारा अवस्थापनाओं हेतु संकलित किया जा सकता है। नीचे इस लेखा में वर्णित मदों की अवधारणाओं को दिखाया गया है।

2.14 कर्मचारियों की मद प्रतिपूर्ति (सीई) को कुल कुल पारिश्रमिक के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे किसी समय अवधि के दौरान कर्मचारियों के द्वारा किए गए काम के बदले कर्मचारियों को अपने उपक्रम के द्वारा नगद या किसी भी तरह भुगतान किया जाता है। इसमें निम्न चीजें शामिल हैं-

i. मजदूरी या वेतनमान नगद अथवा किसी भी प्रकार द्वारा, और
ii. नियोक्ताओं द्वारा अपने कर्मचारियों को सामाजिक प्रतिभूति प्रदान करना। सामाजिक बीमा योजनाओं के लिए सामाजिक योगदान अदायगी वाला होता है।

सामाजिक योगदान वैसा वास्तविक योगदान हैं जिसका भुगतान नियोक्ताओं द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए सामाजिक लाभों को सुरक्षित रखने हेतु निजी रूप से संचालित सामाजिक बीमा योजना अथवा सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए किया जाता है। साथ ही नियोक्ताओं द्वारा यह एक ऐसा आयातित सामाजिक योगदान भी है जो बिना निधि के सामाजिक लाभों को प्रदान करता है।

2.15 उत्पादन तथा निर्यात में लगने वाला कर सरकारी आय है जिसमें निम्न शामिल हैं-

क. उत्पादों पर लगनेवाला कर माल में अदा करने योग्य होता है तथा उत्पादित सेवा मुहैया, बेची, स्थानांतरित या फिर अपने उत्पादकों द्वारा निपटान की जाती है, जिसमें वैट, विशिष्ट कर, बिक्री कर तथा उत्पाद कर आदि शामिल है।

ख. माल औऱ सेवाओं के निर्यात पर कर व शुल्क।

ग. उत्पादन पर अन्य कर जिसमें स्वामित्व अथवा जमीन के उपयोग पर, इमारतें अथवा उत्पादन हेतु अन्य परिसंपत्तियां शामिल है। पेट्रोल या काम पर लगे मजदूर, व्यापार तथा व्यावसायिक लाइसेंस शुल्क, स्टंप कर आदि इसमें शामिल हैं।

2.16 उपशीर्ष गैर-लुप्त मौजूदा वेतनमान होते हैं जिसे सरकारी इकाईयां सहायता अथवा प्रोत्साहन के रूप में उत्पादित इकाईयों को मुहैया कराती है। इसका मापन उत्पादित माल तथा सेवाओं के मूल्य/आयतन के आधार पर किया जाता है। उत्पादन पर उपशीर्ष नकारात्मक करों के रूप में जाने जाते हैं जबकि प्रचालन लाभ पर उनका प्रभाव उत्पादन के करों का विलोम होता है। यह उत्पादक इकाई द्वारा अदायगी योग्य उत्पादन कर होता है।

2.17 प्रचालन अधिशेष तथा मिश्रित आय लेखा के उत्पादन में एक संतुलनकारी मद होता है और इसे निवल मूल्य संवर्धन में कमी करके प्राप्त किया जाता है तथा कर्मचारियों की प्रोत्साहन राशि तथा उत्पादन पर निवलता के बाद अन्य कर तथा उत्पादन पर अन्य उपशीर्ष शामिल है। मिश्रित आय केवल गैर-कॉरपरेट उद्यमों से संबंधित है जिसका स्वामित्व पारिवारिक स्तर पर होता है जहां इसके स्वामी स्व-नियोजित होते हैं। इसमें दोनों पारिश्रमिकता के स्वामी अथवा अन्य कई पारिवारिक सदस्य व उत्पादन से प्राप्त प्रचालन अधिशेष भी शामिल है।

<u>प्राथमिक आय आवंटन का लेखा</u>

2.18 द्वितीय उपलेखा प्राथमिक आय वितरण के साथ जुड़ा हुआ है जो यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार मूल्य संवर्धन को विभिन्न संस्थानिक क्षेत्रों के उनकी क्षमता के आधार पर (वैसे उत्पादकों के अलावा जिनके कार्यकलाप प्राथमिक आय उत्पन्न करते हैं) प्राथमिक आय अथवा प्राप्तकर्ता के रूप में वितरित किया जाता है। आय लेखा सृजन की तरह ही इसे प्रतिष्ठानों तथा संस्थानाकि इकाईयों दोनों में जोड़ा जा सकता है, प्राथमिक आय आवंटन लेखा में भी उत्पादन से कोई सीधा लिंक नहीं है तथा इसे केवल संस्थानिक इकाईयों के साथ ही जोड़ा जा सकता है।

2.19 इस लेखा में, संसाधनों के अंतर्गत मदें आय उत्पत्ति लेखा में उपयोग में आनेवाली मदों के समान होती है। ये मदें अब प्राथमिक आय प्राप्त करते हुए संस्थानिक क्षेत्रों के लेखों के अंतर्गत गिनी जाती है। उदाहरण के तौर पर कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति पारिवारिक सेक्टर पर प्राप्त की जाती है जबकि उत्पादन पर कर तथा निर्यात रहित छूट सरकार की आय होती है तथा उनके संबंधित लेखों को संसाधनों के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति तथा कर रहित छूट में गैर-आवासीय संस्थानिक क्षेत्र भी शामिल हैं।

2.20 इस लेखा में संसाधन के अंतर्गत, एक नई मद संवर्धित की जाती है जिसे संपत्ति आय कहा जाता है। इसमें आय वित्तीय परिसंपत्तियों के स्वामित्व एवं मूर्त गैर-उत्पादित परिसंपत्तियों से प्राप्त होती है, मुख्य रूप से जमीन तथा उप मृदा परिसंपत्तियां उत्पादन में उपयोग की जाती हैं। इसमें गैर-निवासियों से प्राप्त आय होती है। उपयोग के आधार पर संपत्ति आय में किराया तथा ब्याज शामिल होता है जो वस्तुतः जमीन के उपयोग तथा उप-मृदा परिसंपत्तियों तथा उधार निधियों के अदा किए जाने योग्य होते है। संपत्ति आय के तत्व एसएनए के वर्गीकृत किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- ब्याज
- निगमों की वितरित आय
- लाभांश
- संभावित निगम की आय निकासी
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर पुनः निवेशित अर्जन
- बीमा पॉलिसी होल्डर से प्राप्त संपत्ति आय
- किराया

2.21 प्राथमिक आय लेखा आवंटन के बायीं तरफ प्रयोगों की सूची बनाई गई है जिसमें ऋणदाताओं, अंशदाताओं, भू-स्वामियों आदि हेतु संस्थानिक इकाईयों अथवा क्षेत्रों द्वारा केवल संपत्ति आय की अदायगियां शामिल है। उपयोग में आने वाली शेष मदें दर्ज़ करना ही संतुलित मद है, प्राथमिक आयों का संतुलन एक संस्थानिक इकाई अथवा क्षेत्र है जिसे कम या कुल अदायगीपूर्ण आय के द्वारा प्राथमिक आयों की कुल मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। कुल अर्थव्यवस्था के स्तर पर प्राथमिक आय के संतुलन की व्याख्या राष्ट्रीय आय के रूप में की जाती है।

<u>द्वितीयक आय वितरण का लेखा</u>

2.22 द्वितीयक आय वितरण का लेखा आय के दूसरे पायदान के वितरण हेतु लेन-देनों को दर्ज़ करने का कार्य करता है। यह प्रदर्शित करता है कि आय किस प्रकार स्थानांतरण के माध्यम से अन्य क्षेत्रों के मध्य वितरित होती है। यहां प्राथमिक आय का संतुलन पूर्व लेखे से किया जाता है जो

व्यर्थ आय तक पहुंचने के लिए स्थानांतरण द्वारा वृद्धि की जाती है। स्थानांतरण एसएनए में लेन-देन के रूप में परिभाषित की जाती है जिसमें एक संस्थानिक क्षेत्र/इकाई प्रतिरूप के रूप में किसी माल, सेवा अथवा परिसंपत्तियों से बिना कुछ लिए हुए किसी अन्य क्षेत्र में एक अच्छी सेवा अथवा परिसंपत्ति मुहैया कराता है। यह लेखा मौजूदा स्थानांतरण ही नहीं बल्कि पूंजी स्थानांतरण के साथ आय की तुलना में बचत व धन को पुनः वितरित करता है।

2.23 मौजूदा स्थानांतरण दो प्रकार के होते हैः नकद में स्थानांतरण तथा वस्तु रूप में स्थानांतरण। एसएनए दो लेखों का उपयोग करते हुए दो प्रकार के स्थानांतरणों के माध्यम से पुनः वितरण प्रणाली में भेद स्पष्ट करता है। आय लेखा का द्वितीयक वितरण प्रकार लेखा में आय का पुनःवितरण आय लेखा के द्वितीयक वितरण में प्रदर्शित किया जाता है। लेखे के संशोधन शीर्ष जो नगद में क्षेत्र द्वारा प्राप्त मौजूदा स्थानांतरणों को दर्ज़ करता है जिसमें प्राथमिक आय का संतुलन (प्राथमिक आय आवंटन का लेखा से लाया गया है) तथा नगद में मौजूदा स्थानांतरण को नीचे वर्णित किया गया है। आय पर मौजूदा कर, धन आदि, सामाजिक योगदान तथा हितलाभ तथा अन्य लेखा के प्रायोगिक पक्ष दर्ज किए जाते हैं। ये उन क्षेत्रों से संबंध रखते हैं जिनसे ये स्थानांतरण अदायगीपूर्ण होते हैं। लेखा निरर्थक आय का आकलन करता है जो लेखा की संतुलनकारी मद है जिसका उपयोग दर्शाया गया है।

2.24 एसएनए इस लेखा में तीन मुख्य प्रकार के स्थानांतरण (ये आवासीय या गैर-आवासीय के मध्य हो सकते हैं) को चिन्हित करता है, ये हैं-

- आय, धन पर मौजूदा कर आदि,
- सामाजिक योगदान तथा हितलाभ, तथा
- अन्य मौजूदा स्थानांतरण

2.25 एसएनए कर को सरकार के लिए संस्थानिक क्षेत्रों/इकाईयों द्वारा नगद तथा वस्तु रूप में किए गए भुगतान को गैर-प्रतिफल व आवश्यक रूप में परिभाषित करता है। इन्हें स्थानांतरण के रूप में जाना जाता है क्योंकि कर अदा करने वाली व्यक्तिगत इकाई को इसके लिए बदले में कुछ नहीं प्राप्त होता है। यद्दपि सरकार माल तथा सेवाएं प्रदान करती है, ये आमतौर पर समुदाय के लिए होती है जो हितलाभ इन लाभों तथा सेवाओं से व्यक्तिगत इकाई प्राप्त करती है, उसकी गणना करना मुश्किल होता है। आय व धन में लगने वाले मौजूदा कर पारिवारिक तथा निगमों से प्राप्त आय में लगाए जाते हैं तथा गैर- आवासीय इकाई द्वारा कर अदायगीपूर्ण हो सकते हैं।

2.26 सामाजिक योगदान तथा हितलाभ अदायगीपूर्ण योगदानों को इंगित करती है तथा सामाजिक बीमा योजना की अदायगी का दावा करती है। कर्मचारी तथा नियोक्ताओं द्वारा योजना में दिए गए सहयोग जो सामाजिक-हितलाभ के रूप में वर्तमान में अथवा भविष्य में कर्मचारियों तथा उनके

आश्रितों को सुनिश्चित किए जाते हैं। योजनाएं सदस्यों को सामाजिक हितलाभ प्रदान करती हैं, जैसे- स्वास्थ्य तथा शिक्षा हितलाभ, आवास, पारिवारिक भत्ता, बेरोजगार तथा सेवानिवृत्ति आदि।

2.27 संस्थानिक क्षेत्रों/इकाईयों के मध्य सभी मौजूदा स्थानांतरण आय, धन की मौजूदा करों में वर्गीकृत नहीं किया जाता तथा सामाजिक योगदान तथा हितलाभ अन्य मौजूदा स्थानांतरणों से संबंधित है। एसएनए की सूची में निम्नलिखित महत्वपूर्ण चीजें शामिल है- निवल गैर-जीवन बीमा किश्त/गैर-जीवन बीमा दावा, सरकार के भीतर मौजूदा स्थानांतरण तथा साथ ही साथ सरकार व अंतर्राष्ट्रीय संगठन के मध्य स्थानांतरण तथा विभिन्न स्थानांतरण।

2.28 प्रयोज्य आय द्वितीयक वितरण आय लेखा का एक संतुलनकारी मद है। पहली बार यह संस्थानिक क्षेत्र के प्राथमिक आय के संतुलन में जोड़कर प्राप्त की जाती है। सभी मौजूदा स्थानांतरण वस्तु रूप में सभी सामाजिक स्थानांतरण क्षेत्र से प्राप्त करने योग्य होते हैं, जिसमें सामाजिक स्थानांतरण शामिल नहीं है उस क्षेत्र से अदा करने योग्य होता है। संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए प्रयोज्य आय को राष्ट्रीय प्रयोज्य आय कहा गया है जिसे राष्ट्रीय आय में जोड़कर प्राप्त किया जाता है। सभी मौजूदा स्थानांतरण नकद में अथवा वस्तु रूप में जैसे, गैर-आवासीय इकाईयों से प्राप्त किए जाते हैं। इसे नकद में सभी मौजूदा स्थानांतरण से घटाकर प्राप्त किया जाता हैं अथवा यह गैर-आवासीय इकाईयों के वस्तु रूप में अदायगीपूर्ण होता हैं। पारिवारिक क्षेत्र से प्राप्त यथावत सामाजिक स्थानांतरण को संसाधनों के अंतर्गत दाएं हाथ की तरफ वाले लेखा में दर्ज़ किया जाते हैं। यह कल्पना करते हुए कि एक प्रकार का सामाजिक स्थानांतरण केवल आवासीय इकाईयों के मध्य स्थान ग्रहण करते है, आवासीय प्रकार के पारिवारिक वस्तुओं द्वारा ग्राह्य स्थानांतरणों का कुल मूल्य सरकारी इकाईयों द्वारा उन अदायगीपूर्ण कुल मूल्य के समकक्ष होना चाहिए। यह लेखा समायोजित प्रयोज्य आय का मापन करता है जो लेखा का संतुलनकारी मद है जो उपयोग में लाया जाता है। यह कुल अर्थव्यवस्था के लिए समायोजित प्रयोज्य आय की तरह ही होती है। चलन में मुख्य रूप से समायोजित प्रयोज्य आय की अवधारणा सरकारी इकाईयों तथा पारिवारिक वस्तुओं के लिए संगत है, समग्र रूप से अर्थव्यवस्था के स्तर पर समायोजित आय तथा प्रयोज्य आय की मुख्य विशेषता उनका संगतपूर्ण होना है।

<u>आय लेखा का उपयोग</u>

2.29 यह मौजूदा लेखा का अंत है। यह लेखा प्रदर्शित करता है कि सरकार, एनपीआईएसएच तथा पारिवारिक क्षेत्र अनंतिम अवक्षय व बचत के मध्य प्रयोज्य आय तथा समायोजित प्रयोज्य आय का आवंटन करती है। केवल एसएनए के अंतर्गत ये तीनों क्षेत्र अनंतिम अवक्षय के कर्जदार होते हैं। आय लेखा उपयोग के दो संस्करण है- एक जो प्रयोज्य आय का उपयोग दर्शाता है। दूसरा,

समायोजित प्रयोज्य आय का उपयोग दर्शाता है। पहले संस्करण में प्रयोज्य आय में ध्यान केंद्रित किया जाता है जो संस्थानिक इकाईयों द्वारा ग्रहण तथा उपयोग की जाती है, विशेष रूप से पारिवारिक वस्तुएं, व्यय करके या फिर वस्तु रूप में सामाजिक स्थानांतरण द्वारा प्राप्त की जाती है। आय लेखा के उपयोग के प्रथम संस्करण में अनंतिम अवक्षय व्यय संतुलनकारी मद के रूप में बचत को प्राप्त करने के लिए प्रयोज्य आय से घटा दी जाती है। दूसरे संस्करण में वास्तविक अनंतिम अवक्षय यथावत संतुलनकारी मद है, बचत प्राप्त करने के लिए समायोजित प्रयोज्य आय से घटा दी जाती है।

2.30 पारिवारिक चीजों की समायोजित प्रयोज्य आय युग्मता से मुहैया सामाजिक स्थानांतरण के मूल्य में जोड़कर उनके प्रयोज्य आय से प्राप्त की जाती है जबकि सरकारी इकाईयों से तथा युग्मता से अदा किए जाने पर एनपीआईएसएस सामाजिक स्थानांतरण के मूल्य में घटाकर प्राप्त किया जाता है। इसी भांति पारिवारिक चीजों को अनंतिम अवक्षय सुगमता से प्राप्त सामाजिक स्थानांतरण की कीमत में जोड़कर उनके अनंतिम अवक्षय व्यय से लिया गया है जबकि सरकारी इकाईयों का वास्तविक अनंतिम उपयोग होता है। तथा एनपीआईएसएच सुलभता से अदायगी होने पर सामाजिक स्थानांतरण के मूल्य में घटाकर प्राप्त किया जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि बचत यथावत होती है चाहे इसे अनंतिम अवक्षय व्यय घटा प्रयोज्य आय के रूप में परिभाषित किया जाए अथवा वास्तिविक अनंतिम अवक्षय घटा समायोजित आय के रूप में परिभाषित किया जाए।

2.31 संतुलनकारी मद व बचत के अलावा इस लेखा में केवल तीन प्रविष्टियां हैं। प्रयोज्य आय, आय लेखा के द्वितीयक वितरण से स्थानांतरित की गई है, जो संसाधनों के अंतर्गत लेखा के दाएं हाथ के लेखा पर दर्ज की जाती है, जबकि अनंतिम अवक्षय व्यय बाएं हाथ की तरफ प्रयोगार्थ दर्ज़ किया जाता है। लेखा प्रमुख रूप से समस्त अर्थव्यवस्था हेतु तीन सेक्टरों के लिए संगत है जो अनंतिम अवक्षय व्यय का निर्माण करती है, जिनके नाम है- सामान्य सरकार, पारिवारिक (एनपीआईएसएच) सेवाएं देने वाले गैर-लाभकारी संस्थान तथा पारिवारिक क्षेत्र।

2.32 वित्तीय तथा गैर-वित्तीय निगम अनंतिम अवक्षय व्यय नहीं बनाते है। वे अनंतिम अवक्षय के लिए पारिवारिक प्रयोगार्थ के रूप में समान मालों तथा सेवाओं की खरीददारी करते हैं, जैसे- विद्युत अथवा भोजन- परंतु ऐसे माल अथवा सेवाएं या तो मध्यवर्ती अवक्षय के लिए उपयोग की जाती है अथवा पारिश्रमिक के रूप में कर्मचारियों को मुहैया कराई जाती है। इस प्रकार दोनों प्रयोज्य आय लेखा जो निगमों के लिए है, केवल डमी लेखा जिसमें अनंतिम अवक्षय व्यय अथवा वास्तविक अनंतिम अवक्षय के लिए प्रविष्टियां होती है। इस प्रकार निगमों की बचत उनके उत्पत्ति अथवा समायोजित उत्पत्ति आयों के समकक्ष होना चाहिए। दूसरे संदर्भ में, निगमों की बचत बहुधा 'प्राप्त कमाई' अथवा निगमों के अवितरित आय की व्याख्या करती है।

2.33 अंतिम अवक्षय व्यय माल व सेवाओं के अनंतिम अवक्षय का लेन-देन सम्मिलित करता है जिसके लिए एक सेक्टर खर्चे का त्वरित धारक है। अर्थव्यवस्था के भीतर अंतिम अवक्षय व्यय में (1) पारिवारिक वस्तुएं, एनपीआईएसएच तथा आम सरकार का अवक्षय व्यय शामिल है। पारिवारिक अंतिम अवक्षय में व्यय शामिल होता है जो माल व सेवाओं के अवक्षय पर आवासीय पारिवारिक वस्तुओं द्वारा प्राप्त होता है। अंतिम अवक्षय व्यय स्थायी परिसंपत्तियों पर आवास अथवा कीमती वस्तुओं से हटकर माना जाता है। आवास स्थल माल की तरह होते है जो आवासीय सेवाओं को प्राप्त करने के लिए उनके गृह-स्वामियों द्वारा उपयोग किए जाते हैं। पारिवारिक वस्तुओं द्वारा आवास पर व्यय कुल प्रयोज्य पूंजी निर्माण को संगठित करता है। जब आवास गृह-स्वामियों द्वारा किराए पर दे दिए जाते हैं तो किराए पर आवास गृहस्वामी द्वारा आवासीय सेवाएं उत्पादन के रूप में दर्ज की जाती है तथा अंतिम अवक्षय व्यय किराए दरों द्वारा दर्ज किया जाता है जब आवास में अधिग्रहण उनके गृहस्वामियों का होता है। आवासीय सेवाओं का लगाया गया कुल मूल्य दोनों उत्पादन अथवा गृह-स्वामियों के अंतिम अवक्षय व्यय पर प्रवेश करता है। बहुमूल्य वस्तुएं महंगा टिकाऊ माल होता है जो सर्वाधिक समय में भी खराब नहीं होता, ज्यादा अवक्षय व उत्पादन नही होता, और प्राथमिकता के आधार पर मूल्य के भंडार के रूप में ग्रहण किए जाते हैं। इनमें प्रमुख रूप से कलाकारी की गई होती है, कीमती पत्थर तथा धातुएं तथा ऐसे पत्थरों व धातुओं वाली जेवरात फैशन से अलग होते हैं। जेवरात मांग पर प्राप्त होते है, इनकी कीमतें उस माल व सेवाओं से संबंध रखती है, अधिक समय तक बढ़ने की प्रवृति होती है अथवा कम से कम उसका क्षय नही होता। यद्दपि जेवरातों के मालिक उन्हें रखकर संतुष्टि पाते हैं। इस प्रकार वे अभ्यस्त नहीं होते कि पारिवारिक अवक्षय माल जिसमें उपभोक्ताओं की टिकाऊ वस्तुएं शामिल है अधिक समय तक उपयोग की जाती हैं।

2.34 सरकार तथा एनपीआईएसएच अपने उत्पादन लेखे में गैर-विपणन माल तथा सेवाएं उत्पन्न करता है, जहां मध्यवर्ती अवक्षय तथा कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति उपयोग के रूप में दर्ज की जाती है। इन उत्पादकों को अनंतिम व्यय गैर-विपणन माल तथा सेवाएं उत्पादन के मूल्य से संबंध रखता है, यह आर्थिक रूप से आवश्यक नहीं है की उन कीमतों पर गैर-विपणन माल तथा सेवाओं की बिक्री से कम पावतियां प्राप्त होती हो। फिर भी यह माल तथा सेवाओं को सम्मिलित करता है जिनकी खरीददारी अथवा एनपीआईएसएच द्वारा बिना स्थानांतरण के, पारिवारिक वस्तुओं के लिए त्वरित स्थानांतरण हेतु खरीदे जाते हैं।

पूंजी लेखा

2.35 पूंजी लेखा गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों के अधिग्रहण तथा उत्पत्ति को दर्ज़ करता है, विशिष्ट रूप से, यह निवल आय में लेखाकरण अवधि के दौरान बचत तथा पूंजी स्थानांतरण के परिणाम स्वरूप यह परिवर्तन प्रदर्शित करता है। लेन-देन अन्य संस्थानिक क्षेत्र/इकाईयों (आवासीय अथवा गैर-आवासीय) अथवा आंतरिक, संस्थानिक क्षेत्र/इकाई के अंतर्गत होता हैं, जो स्वयं के उपयोग के लिए उत्पादित परिसंपत्तियों से प्राप्त होते हैं। संचयन लेखा को संकलित करने के लिए, विशिष्ट रूप से पूंजी लेखा जरूरी है। सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि किन परिसंपत्तियों को शामिल किया गया है। एसएनए 1993 में परिसंपत्तियों को सत्व के रूप में परिभाषित किया गया हैः-

क. यहां स्वामित्व अधिकार संस्थानिक इकाईयों द्वारा व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक रूप से प्राप्त किए जाते है, और

ख. जिससे आर्थिक हितलाभ अपने स्वामियों से प्राप्त किए जा सकते हैं अथवा उन्हें प्राप्त करके समय दर समय उनका उपयोग किया जाता है।

दो मुख्य परिसंपत्तियों का वर्गीकरण निम्नलिखित है-

1. वित्तीय परिसंपत्तिया, तथा
2. गैर-वित्तीय परिसंपत्तियां

2.36 वित्तीय परिसंपत्तियां, वित्तीय लेखों से संबंधित होती है। गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों जो पूंजी लेखा से संवर्धित होती है उसकी दो कोटियां है-

क. उत्पादित परिसंपत्तियां जो गैर-वित्तीय संपत्तियां है जो उत्पादन प्रक्रियाओं से उत्पादन के रूप में अस्तिव में आई है जो एसएनए की उत्पादन सीमा के अंतर्गत गिरावट लाती है।

2.37 उत्पादित परिसंपत्तियां तीन प्रकार से उप-विभाजित की गई हैः

(1) स्थायी परिसंपत्तियां (2) माल सूचियां, तथा (3) जेवरात। स्थायी परिसंपत्तियां (क) मूर्त अथवा (ख) अमूर्त परिसंपत्तियां एक से अधिक साल के उत्पादन में दोहरे रूप में उपयोग की जाती हैं। जेवरात बहुमूल्य कलाकृतियां होती हैं, कीमती पत्थर तथा धातुएं, जेवरात उत्पादन अथवा उपयोग में उपयोग नहीं की जाती हैं। उनका आर्थिक मूल्य अपेक्षाकृत गिर जाता है जिससे उनकी कीमत बढ़ती है।

2.38 इसके विपरित गैर-उत्पादित परिसंपत्तियां आर्थिक परिसंपत्तियां होती है जो उत्पादन के लिए जरूरी होती है परंतु उत्पादन प्रक्रिया के तहत उत्पादित नहीं होती, जैसे- भूमि तथा गैर-संवर्धित जंगल अथवा खनिज लवण। प्राकृतिक गैर-उत्पादित परिसंपत्तियों में निश्चित मूर्त परिसंपत्तियां शामिल है, जैसे- एकस्व दलीलें, किश्तें अथवा स्थानांतरणीय संपर्क, खरीददारी के समय सद्भावना आदि। निश्चित पर्यावरणीय परिसंपत्तियों में प्रभावी नियंत्रण को स्थापित करने के लिए बाध्य नहीं है। जैसे- हवा, सागर और वे सभी जिनके अस्तित्व की जानकारी उपलब्ध नहीं है, यदि है भी तो इतनी दूर

तथा पहुंच से बाहर है, जैसे कुछ सुनसान जंगल। इसी प्रकार कुछ प्राकृतिक परिसंपत्तियां आर्थिक परिसंपत्तियों के रूप में अर्हता नहीं प्राप्त करती क्योंकि कोई भी आर्थिक लाभ इनसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए उपलब्ध खनिज लवण जो निकट भविष्य में आर्थिक रूप से दोहन करने योग्य है, फिर भी ये संभवतः संबंधित कीमतों में प्रोद्योगिकी अथवा मुख्य परिवर्तनों में अदृश्य वृद्धि के जरिए दोहन करने योग्य हैं।

2.39 नीचे पूंजी लेखा में दर्ज लेन-देन की मदें दर्शायी गई हैः

2.40 पूंजी लेखा बाएं तरफ परिसंपत्तियां तथा दाईं तरफ निवल आय दर्ज़ करती है। यह गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों में मूल्य को लेखित करती है जो आवासीय संस्थानिक क्षेत्र इकाईयों के द्वारा प्राप्त अथवा निर्माण किए जाते हैं तथा संस्थानिक क्षेत्र इकाई के निवल आय में परिवर्तन दर्शाता है जिसके परिणामस्वरूप बचत व पूंजी स्थानांतरण होता है। पूंजी लेखा में संतुलनकारी मद जो निवल कर्ज वाली (+)/निवल उधार वाली (-) लेखा के बाएं तरफ प्रदर्शित की गई है। स्थायी पूंजी का अवक्षय (सीएफसी) बाएं तरफ दर्शाया गया है।

2.41 लेखा का बायां छोर परिसंपत्तियों को संकलित करने के लिए संसाधन उपलब्ध कराता है। इनमें निवल बचत होती है तथा संतुलनकारी मद को आय लेखा के उपयोग व पूंजी स्थानांतरण के उपयोग से आगे बढ़ाया जाता है। अदायगी पूंजी स्थानांतरण नकारात्मक चिह्न के साथ दर्शाए जाते है।

2.42 लेखा का बायां छोर निम्न चीजें दर्ज़ करता है- क्रय अथवा विक्रय के माध्यम से समायोजित अथवा ग्रृहीत गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों का मूल्य, गिरावट अथवा स्क्रैप वस्तु रूप में, पूंजी स्थानांतरण, बार्टर, अथवा निजी इस्तेमाल हेतु होने वाले उत्पादन। गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों में परिवर्तन निम्नलिखित है-

क. कुल पूंजी निर्माण
   i. कुल स्थायी पूंजी निर्माण (सीएफसीएफ)
   ii. स्थायी पूंजी का अवक्षय (सीएफसी)
   iii. माल सूचियों में परिवर्तन, तथा
   iv. बहूमूल्यों को अधिग्रहणाधीन निपटान

2.43 जीएफसीएफ स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए लेनदेन का प्रतिफल हैः-

क. नई अथवा प्रविष्टकारी मूर्त स्थायी परिसंपत्तियों का अधिग्रहण रहित निपटान जिसमें निम्न शामिल है- आवास, अन्य भवन तथा निर्माण, मशीनरी तथा सामान तथा खेती करने योग्य परिसंपत्तियां जैसे- वृक्ष तथा चारा जिसका उपयोग दोहरे रूप में सतत उत्पादों जैसे- फल, रबड़ तथा दूध आदि प्राप्त करने के लिए किए जाते हैं।

ख. नई अथवा प्रविष्टकारी मूर्त स्थायी परिसंपत्तियां के अधिग्रहण रहित निपटान, जैसे- खनिज खोज, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, मनोरंजन, साहित्यिक अथवा कला से संबंधित मूल तथा अन्य अमूर्त स्थायी परिसंपत्तियां,

ग. जमीन सहित मूर्त गैर-उत्पादित परिसंपत्तियां में मुख्य सुधार

घ. गैर-उत्पादित परिसंपत्तियों के स्वामित्व वाले स्थानांतरण से जुड़ी लागतें

2.44 <u>माल सूचियों में परिवर्तनः</u> जब एक वस्तु माल सूची में दर्ज़ कर दिया जाता है तब यह स्वामी द्वारा एक परिसंपत्ति के रूप में प्राप्त किया जाता है। स्वामी के हिसाब से एक अच्छी खाली माल सूची परिसंपत्ति का निपटान है, इस प्रकार माल-सूचियों में परिवर्तन परिसंपत्तियों का अधिग्रहण तथा परिसंपत्तियों का निपटान है तथा इसका यथावत सामान्य रूप से अन्य परिसंपत्तियों में परिवर्तनों के रूप में मूल्य आंका जाता है।

2.45 पूंजी स्थानांतरण प्राप्य अथवा अदायगीपूर्ण होता है जो नकद अथवा वस्तु रूप में हो सकता है। यह लेन-देन में अंतर्निहित रहता है तथा इसमें एक परिसंपत्ति के स्वामित्व (माल सूची तथा नगद के अलावा) का स्थानांतरण एक संस्थानिक सेक्टर या इकाई से दूसरे संस्थानिक सेक्टर में होता है। दूसरी तरफ, पूंजी स्थानांतरण प्राप्तकर्ता को नकद स्थानांतरण करता है जो अन्य परिसंपत्ति के अधिग्रहण हेतु उपयोग करने के लिए अपेक्षित है।

<u>वित्तीय लेखा</u>

2.46 वित्तीय लेखा लेखों में दूसरे पायदान पर आता है तथा यह संचयन का लेन-देन करता है। वित्तीय लेखा लेखों की पूर्ण अनुक्रम में एक अनंतिम लेखा है जो संस्थानिक इकाईयों के मध्य लेन-देन दर्ज़ करता है। वित्तीय लेखा के पास संतुलनकारी मद नहीं होता है जिसे अगले लेखा में ले जाया जाए, यही स्थिति सभी लेखों में होती है जिसकी पहले चर्चा की जा चुकी है। चूंकि वित्तीय लेखा का निवल संतुलन परिभाग के समकक्ष होता है, परंतु पूंजी लेखा के संतुलनकारी मद की तरफ उल्टा चिह्न बना होता है।

2.47 वित्तीय लेखा वैसे लेन-देन दर्ज़ करता है जो वित्तीय परिसंपत्तियों व देनदारियों में अंतःनिहित होता है जो संस्थानिक इकाईयों व इन इकाईयों तथा शेष विश्व के मध्य स्थान ग्रहण करता है। लेखा का बायां छोर परिसंपत्तियों का अधिग्रहण रहित निपटान दर्ज़ करता है जबकि दायां छोर उनके कम पुनःवेतन में देनदारियों का कर दर्ज़ करता है। देनदारियांरहित का निवल कर वित्तीय परिसंपत्तियों के निवल अधिग्रहण मूल्य के समकक्ष होता है, जिसमें उल्टा चिह्न बना होता है। यह निवल उधार लेन-देन तथा पूंजी लेखा में संतुलनकारी मद के समकक्ष होता है।

2.48 निवल बचत आय लेखा का उपयोग करने वाली संतुलनकारी मद है तथा निवल बचत प्लस निवल प्राप्य/देय पूंजी स्थानांतरण अदायगीपूर्ण गैर-वित्त परिसंपत्तियों को संचयित करने के लिए

उपयोग किए जा सकते हैं। यदि इन्हें इस तरीके से नहीं हटाया जाए, तब परिणामतः लाभ को निवल उधार कहा जाता है। वैकल्पिक रूप से निवल बचत तथा पूंजी स्थानांतरण, गैर वित्तीय परिसंपत्तियों के निवल संचयन को सम्मिलित करने के लिए पर्याप्त होते है। परिणामतः घाटा को निवल उधारी कहा जाता है। यह लाभ अथवा घाटा, निवल उधार अथवा उधारी एक संतुलनकारी मद है जो पूंजी लेखा से वित्तीय लेखा में चढ़ा दिया जाता है।

2.49 एसएनए में वित्तीय परिसंपत्तियां आठ मुख्य कोटियों में विभक्त है। प्रश्न में ये इकाई अथवा क्षेत्र की परिसंपत्तियां है या देनदारियां है के आधार पर, इन श्रेणियां को वित्तीय लेखा के दोनों ओर सूचीबद्ध किया गया है।

एफ.1.- मौद्रिक सोना तथा विशेष कला अधिकार (एसडीआर)

एफ.2. मुद्रा व जमा

एफ.3. शेयरों के अतिरिक्त प्रतिभूतियां

एफ.4. ऋण

एफ.5. शेयर तथा अन्य इक्विटी

एफ.6. बीमा तकनीकी रिजर्व

एफ.7. वित्तीय यौगिक

एफ.8. अन्य प्राप्य लेखा/अदायगीपूर्ण

3. <u>अन्य चयनित अंक</u>

3.2 इस अनुभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी (एनएएस) के क्रियान्वयन में कुछ प्रमुख अंक, कवरेज, पद्धतियां तथा अन्य उपयोग में आए स्रोतों को विस्तारित किया गया है। नीचे इन्हें व्यापक रूप से समूहबद्ध किया गया है।

i. एनएएस में क्रियान्वित एसएनए की विशेषताएं
ii. सामाजिक लेखा मैट्रिक
iii. संस्थानिक क्षेत्र लेखा का कवरेज
iv. बुनियादी कीमतों पर जीडीपी

(1) एनएएस में क्रियान्वित एसएनए की विशेषताएं-

3.3 सीएसओ द्वारा क्रियान्वित एसएनए 1993 की सिफारिशें, संबंधित है-

i. बाजार उत्पादक तथा उत्पादन सीमा से जुड़ें एक जैसे उत्पादों की कीमतों के आधार पर गैर-बाजारी कृषि-संबंधी फसलों का मूल्यांकन

ii. स्वामित्व धारकों द्वारा स्व-लेखा उत्पादन आवासीय सेवाओं का समावेशन तथा पारिवारिक कर्मचारियों को नियोजित करने वाली पारिवारिक तथा व्यक्तिगत सेवाएं

iii. जीवन तथा गैर-जीवन बीमा उत्पादन आकलनों के संबंध में प्रीमियम पूरकों का समावेशन

iv. शेष वैश्विक लेखा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों को पुनःनिवेशित अर्जन। यह व्यवहार कुल राष्ट्रीय उत्पाद, बचत तथा पूंजी निर्माण को प्रभावित करता है।

v. स्व-नियोजित स्थायी आय के रूप में स्व-लेखा श्रम का मूल्य व्यवहार में लाया जाता है,.

vi. पूंजी व्यय के रूप मे व्यवहरित खनिजों के खनन में व्यय

vii. वित्तीय मध्यवर्ती सेवाओं का प्रत्यक्ष रूप से आवंटन (एफआईएसआईएम) इन सेवाओं के उपयोगकर्ताओं का मापन किया जाता है, उद्योगों के मध्यवर्ती अवक्षय के रूप में अनंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए अनंतिम अवक्षय के लिए आवंटन

viii. बहूमल्यों पर खर्चे का समावेशन जो मूल्य के भंडारण के रूप में किए जाते हैं तथा कुल पूंजी निर्माण के रूप में व्यवहरित किए जाते हैं,

ix. कुल पूंजी निर्माण के रूप में सॉफ्टवेयर के रूप में व्यय का व्यवहार

x. कुल पूंजी निर्माण के रूप में पशुधन की प्राकृतिक वृद्धि का समावेशन

xi. कुल पूंजी निर्माण के रूप में गर्भधारण अवधि के दौरान कुछ पादप फसलों पर हुए खर्चों का समावेशन

xii. कुल स्थायी पूंजी निर्माण में पवन ऊर्जा प्रणालियों की अवस्थापना करने में लगे पूंजी व्यय का योग

xiii. सभी स्थायी परिसंपत्तियों पर अवक्षय का आकलन जिसमें सरकारी भवन, सड़कें, बांध आदि सर्वकालिक माल-सूची प्रणाली (पीआईएम)

xiv. हर पांच साल आधार वर्ष को बदलने की प्रणाली को स्वीकृत करना, जनवरी 2010 में एनएएस की नई अनुक्रमओं (आधार वर्ष 2004-05) को निकालते हुए एसएनए 2008 की कुछ सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिए सीएसओ ने प्रयास किए जिसमें डाटा परमिट उपलब्ध थे। कुछ सिफारिशें तो वर्तमान में नई अनुक्रम का निर्माण करती हैं।

क. एसएनए 2008 की सिफारिशों के क्रम में पूंजी व्यय के रूप में पब्लिक सेक्टर में अनुसंधान व विकास व्यवहार में लाना,

ख. स्थायी पूंजी तथा पूंजी स्टॉक के अवक्षय का आकलन करते हुए संतुलन प्रक्रिया (जीवन परिसंपत्तियां) के क्षय को व्यवहार में लाना

ग. स्वामित्व वाले आवासों का आकलन करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगकर्ता लागत पहुंच को प्रत्येक किराए के आवास के आधार पर इन सेवाओं को लगाने वाली मौजूदा प्रणाली के विपरीत स्वीकृति

घ. पूंजी निर्माण के रूप में ढ़ांचा घटक तथा रक्षा पूंजी लेखा की मशीनरी परिवहन परिव्यय को व्यवहार में लाना, जो पहले मध्यवर्ती अवक्षय के रूप में व्यवहरित किया जाता था।

(2.) सामाजिक लेखांकन मैट्रिक्स

3.4 राष्ट्रीय लेखों में समाहित सर्वाधिक सूचनाओं को प्रस्तुत करने के वैकल्पिक तरीके के रूप में, एसएनए सामाजिक लेखांकन मैट्रिक्स (एस.ए.एम) के लेखों में डाटा को पुनःव्यवस्थित करने का सुझाव देता है। एस.ए.एम को मैट्रिक्स प्रारूप में राष्ट्रीय लेखा प्रणाली की प्रस्तुति के रूप में परिभाषित किया जाता है। एसएएम संपूर्ण अर्थव्यवस्था हेतु संकलित किए गए एसएनए के महत्वपूर्ण लेनेदेनों को प्रस्तुत करता है। एक सकल मैट्रिक्स के रूप में एस.ए.एम समग्र रूप से संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर विशेष ध्यान देता है, अर्थात- एक पृष्ठ पारिवारिक समुच्चयों तथा राष्ट्रीय संतुलनकारी मदों के मध्य मुख्य लेन-देन की श्रेणियों के अंतःसंबंध को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। एस.ए.एम कुल अर्थव्यवस्था के लिए संकलित-असंख्य आवश्यक लेन-देन प्रस्तुत करता है। नौ प्रकार के (समेकित) लेखों में होने वाले सभी लेन-देन (1) माल व सेवाओं की आपूर्ति 2. उत्पादन, 3. आय का उत्पादन, 4. प्राथमिक आय का आवंटन, 5. आय का द्वितीयक वितरण, 6. आय का उपयोग, 7. पूंजी लेखा, 8. स्थायी पूंजी निर्माण लेखा तथा, 9. वित्तीय लेखा, एस.ए.एम के अंतर्गत विश्व (मौजूदा तथा पूंजी) के शेष लेन-देनों से जुड़ें होते है।

प्रत्येक लेखा में संभावित प्रकार के लेखे पंक्ति तथा कॉलम हेडिंग्स में कोष्ठकों में दर्शाएं जाते हैं। सभी लेखों को पंक्ति तथा कॉलम के जोड़ों में प्रस्तुत किया जाता हैं।

3.5 एस.ए.एम 2004-05 से लेकर 2011-12 वर्षों के लिए प्रस्तुत किया जाता है। माल तथा सेवाएं और उत्पादन लेखा मैट्रिक्स के पहले दो पंक्तियों तथा कॉलम में प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें आपूर्ति का सकल संस्करण तथा सारणी उपयोग शामिल होता है। कॉलम 1 माल व सेवाओं की आपूर्ति प्रस्तुत करता है। हालांकि व्यापार व परिवहन गुंजाइशों को सकल स्तर पर उत्पादन में जोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ये इस सारणी के बाएं हाथ वाले उच्च शीर्ष पर पंजीकृत किए जाते हैं क्योकिं विवरणित एसएएम में गैर जीरो हैं। बुनियादी कीमतों को उत्पादन पंक्ति 2 में दर्शाया गया है। उत्पाद रहित छूटों में कर उत्पादन मूल्य में शामिल नहीं होते हैं परंतु सरकार (पंक्ति 4) के लिए प्राथमिक आय आवंटन लेखा पर बुक किए जाते हैं। निर्यात दुनिया के शेष लेखों (पंक्ति 10) के लिए मौजूदा लेखा से पैदा होती है। कॉलम 1 के तत्व मालों तथा सेवाओं की कुल आपूर्ति में

खरीददारी की कीमत पर माल तथा सेवाओं का उपयोग दर्शाता है, खरीददार की कीमत पर (कॉलम 1 में कुल योग यथावत), कॉलम 2 में मध्यवर्ती अवक्षय, कॉलम 6 में अंतिम अवक्षय व्यय, कॉलम 7 में माल-सूचियों में परिवर्तन, कॉलम 8 में कुल स्थायी जमा निर्माण तथा कॉलम 10 में आयात।

3.6 पंक्ति 2 बुनियादी कीमतों पर उत्पादन प्रदर्शित करती है। इस मूल्यांकन के कारण पंक्ति 2 की समन्वित राशि उत्पादों कर घटा छूटों की अनन्य होती है। बदले में, इसका तात्पर्य है कि यह लेखा कुल निवल मूल्य संवर्धन में सम्मिलित नहीं होता, सेल देखें (3.2)। स्थायी पूंजी का अवक्षय प्रत्यक्ष रूप से स्थायी लेखा (पंक्ति 8 तथा कॉलम 2) में रखा जाता है।

3.7 तीसरा लेखा जैसे- आय उत्पत्ति लेखा आय के उत्पादन को दर्ज़ करता है तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह (निवल) प्राथमिक इनपुट कोटियों में वर्गीकृत किया जाता हैः

क. कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति, (ख.) निवल स्थायी आय, (ग.) निवल बुनियादी कीमतों पर निवल मूल्य परिवर्धन, (घ.) उत्पादन पर अन्य कर तथा छूटें। बुनियादी कीमतों पर निवल मूल्य परिवर्धन (पंक्ति 3, कॉलम 2), उत्पादन से मध्यवर्ती अवक्षय स्थायी पूंजी से घटाकर प्राप्त किया जाता है। अन्य मूल्य परिवर्धन जैसे- कर्मचारियों की प्राप्त प्रतिपूर्ति तथा विदेशों में अदा इस सारणी में पंजीकृत होना चाहिए, सेल में (3, 10) तथा सेल (10, 3 क्रमिक रूप से)। इन सभी का परिणाम है कि आय का उत्पादन नए संतुलनकारी मद के साथ बंद कर दिया जाता है, जैसे- बुनियादी कीमतों पर निवल उत्पादित आय, के मध्य में कुल निवल मूल्य परिवर्धन तथा निवल राष्ट्रीय आय (एन.एन.आई)

3.8 चौथी पंक्ति में, प्राथमिक आय आवंटन लेखा (लेखा 4) में निवल उत्पादित आय को उत्पादों पर सहायिकी रहित कर के साथ तथा शेष विश्व के संपत्ति आय को प्रस्तुत किया जाता है। यह मद सेल में दर्ज़ की जाती है (4, 10), पारिवारिक संपत्ति आय प्रवाह रेखावत (पंक्ति 4, कॉलम 4) में दर्ज़ किए जाते हैं। एन.एन.आई प्राप्त करने के लिए, यह रेखावत मद तथा संपत्ति आय शेष विश्व को अदा किए जाते हैं जिसे कॉलम 4 के कुल में से जरूर घटाया जाना चाहिए जिन्हें पंक्ति 4 के समरूप कुल योग से प्राप्त किया जाता है।

3.9 आय (लेखा 5) के द्वितीयक वितरण में, आय, धन आदि पर मौजूदा कर के साथ एन.एन.आई, तथा विदेश के सभी मौजूदा स्थानांतरण को पंक्ति 5 में दर्शाया गया हैं। आय, धन आदि पर पारिवारिक मौजूदा कर, सामाजिक योगदान व हितलाभ तथा अन्य मौजूदा स्थानांतरण रेखावत (पंक्ति 5, कॉलम 5) में दर्ज़ किए जाते हैं। संतुलनकारी मद, जैसे- निवल प्रयोज्य आय सेल (6.5), जो आय लेखा के उपयोग पर होती है।

3.10 आय लेखा उपयोग (लेखा 6) निवल प्रयोज्य आय के खर्च, माल व सेवाओं तथा निवल बचत पर अनंतिम अवक्षय व्यय को रिकॉर्ड करता है जिसे पूंजी लेखा पर रखा जाता है।

3.11 पूंजी तथा वित्तीय लेखा वैसे वित्तीय लेखों के साथ एक-दूसरे से जुड़ें होते है जो संस्थानिक सेक्टर द्वारा वर्गीकृत नहीं होते बल्कि वित्तीय परिसंपत्ति द्वारा वर्गीकृत किए गए होते हैं। परिणामस्वरूप इस एस.ए.एम का आकलन संस्थानिक उप-क्षेत्र द्वारा विभिन्न वित्तीय परिसंपत्तियों के अधिग्रहण रहित निपटान, सेल देखिए (9,7) तथा अनेक देनदारियों में पुनःवेतन रहित मुद्रा, सेल देखो (7,9) दोनो को प्रदर्शित करेगा। यहां लेन-देन की इन दोनों कोटियों को तब तक संयुक्त कर दिया गया हैं जब तक शेष विश्व इससे संबंद्धित है। मौजूदा एस.ए.एम में सकल संतुलनकारी मद निवल उधारी का समावेश कर सेवा प्रदान करता है।

3.12 पंक्ति 7 कुल अर्थव्यवस्था के निधि की उपलब्धता को प्रस्तुत करता हैः निवल बचत, उधारी, शेष विश्व से प्राप्य पूंजी स्थानांतरण तथा रेखावत मद (पंक्ति 7, कॉलम 7) अर्थात- प्राप्य पारिवारिक पूंजी स्थानांतरण। किस प्रकार ये निधियां आवंटित की गई है इसे कॉलम 7 दर्ज़ करता है- बहुमूल्य सामानों के उत्पत्तिता रहित अधिग्रहण सहित माल-सूचियों में परिवर्तन, सेल (1,7), स्थानांतरण अदायगीपूर्ण (पारिवारिक) सेल (7,7), निवल स्थायी पूंजी निर्माण सेल (8,7), शेष विश्व को देय उधारी तथा अदायगीपूर्ण पूंजी स्थानांतरण। स्पष्ट रूप से शेष विश्व के संतुलनकारी मद को निवल उधार देनदारी से (9,11) उधार लेनदारी घटाकर प्राप्त किया जा सकता है।

3.13 प्रायः कॉलम 8 में कुल स्थायी पूंजी निर्माण का आकलन तथा पंक्ति 8 में स्थायी पूंजी का अवक्षय पहले से उपलब्ध है। परिणामस्वरूप अवशिष्ट, निवल प्राकृतिक निर्माण पंक्ति 8 तथा कॉलम 7 में प्रदर्शित प्राप्त किए जा सकते हैं।

3.14 वित्तीय लेखा (लेखा 9) में, उधार देयता पंक्तिवार तथा उधार ग्राह्यता कॉलमवार प्रस्तुत की जाती है। संतुलनकारी मद पंक्ति 9 में दी गई है क्योंकि शेष विश्व के लिए पूंजी लेखा का संतुलनकारी मद एक समान है।

3.15 मौजूदा बाह्य शेष राशि जो सेल (11,10) में प्रदर्शित है के अलावा शेष विश्व के लिए मौजूदा तथा पूंजी लेखा के घटक (लेखा 10 व 11) की चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

3.16 माल तथा सेवाओं में घटित होने वाली कुल विसंगति पंक्ति 1, कॉलम 12 में प्रदर्शित है जो मौजूदा लेखों में शेष विश्व तथा आय लेखा व पूंजी लेखा के उपयोग में विसंगतियों का योग है।

(3.) संस्थानिक क्षेत्रों का कवरेज

3.17 एसएनए के अनुसार आय लेखों का उत्पादन तथा उत्पत्ति उपलब्ध डाटा के आधार पर विभिन्न संस्थानिक क्षेत्रों के लिए (वित्तीय निगमों, गैर-वित्तीय निगमों, आम सरकार तथा

एन.पी.आई.एस.एच सहित पारिवारिक वस्तुएं) प्रस्तुत किया जाता हैं। डाटा की न्यूनता के कारण, आय लेखा उत्पादन के विपरीत लेखों के अनुक्रम को प्रस्तुत करना संभव नहीं हो पाया।

3.18 एनएएस में, सीएसओ वर्तमान में सभी को (1) सकल पारिवारिक उत्पाद (जीडीपी), (2) निवल पारिवारिक उत्पाद (एन.डी.पी) के तथा (3) उद्योग उद्गम तथा अर्थव्यवस्था के संगठित तथा असंगठित सेक्टरों द्वारा कारक आय के आकलनों को प्रदान करता है। इन तीनों सकलों से प्राप्त डाटा तथा उनके स्रोत, प्रक्रिया तथा कवरेज संस्थानिक क्षेत्र लेखों को तैयार करने के लिए उपयोग किए गए हैं। एनएएस के अंतर्गत कुल अर्थव्यवस्था व्यापक रूप से संगठित तथा असंगठित खंडों में विभक्त की गई है। इनसे संबद्ध इस ब्राउचर में संस्थानिक सेक्टर के लेखे प्रस्तुत किए गए हैं, असंगठित सेक्टर पारिवारिक सेक्टर (एन.पी.आई.एस.एच सहित) के रूप में अमल में लाया जाता है तथा संगठित सेक्टर वित्तीय निगमों, गैर-वित्तीय निगमों तथा आम सरकार में विभक्त होता है। उन तीनों संस्थानों के कवरेज का विवरण नीचे दिया गया हैः

क. <u>सामान्य सरकारी सेक्टर</u>

3.19 सामान्य सरकारी क्षेत्र संस्थानिक इकाईयों में समावेशित है जो राजनीतिक जबावदेही तथा आर्थिक निगमन में अपनी भूमिका को पूरा करने के अलावा व्यक्तिगत अथवा सामूहिक अवक्षय हेतु मुख्य रूप से गैर-बाजारी व पुनः वितरित आय तथा धन पर सेवाएं (संभवतः वस्तुएं) मुहैया कराता है। इस सेक्टर में केंद्र का प्रशासनिक भाग, राज्य/संघ राज्य, स्थानीय निकाय तथा सरकार के स्वायत्त संस्थान व विभागीय औद्योगिक प्रक्रम (डीसीयू) शामिल हैं जोकि गैर-कॉरपरेट उद्यम है वह पब्लिक प्राधिकरण द्वारा प्रत्यक्ष तौर पर संचालित, नियंत्रित तथा स्वामित्वाधिकार किए हुए हैं। सरकारी प्राधिकरण तथा पब्लिक सेक्टर पर एक विस्तृत विचार-विमर्श किया गया जो सीएसओ के प्रकाशन राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में शामिल किए गए डाटा के आर्थिक विश्लेषणों के लिए उपयोग किए गए डाटा, अवधारणा के स्रोत के विषय में जानकारी प्रदान करता हैः- स्रोत तथा प्रक्रियाएं-

ख. <u>वित्तीय निगम</u>

3.20 एसएनए में वित्तीय उद्यमों को उन उद्यमों के रूप में परिभाषित किया गया है जो मूल रूप से वित्तीय मध्यवर्तन अथवा सहायक वित्तीय क्रियाकलापों में अंतर्निहित होती है जो निकटता से वित्तीय मध्यवर्तन से संबंधित होती है। वे इस प्रकार उद्यमों से जुड़ी होती हैं जिनका वित्तीय कार्य बिना आवश्यक पैठ के वित्तीय मध्यवर्तन को सुविधाजनक बनाता है।

3.21 भारत में वित्तीय सेक्टर व्यापक रूप से नीचे उप-सेक्टरों में विभाजित है-

i. वाणिज्यिक बैंक
ii. आरबीआई की बैंकिंग विभाग

iii. पब्लिक गैर-बैंकिंग वित्तीय निगम (केंद्र और राज्य) (यूटीआई, नाबार्ड, आईडीबीआई, डीएफसी, एचपीएफसी, एसएचसी) तथा सरकारी कंपनिया (आर.एफ.सी, हुटको, पीएफसी में आईआरएफसी, एपीआईडीसी, केएसआईडीसी, तमिलनाडु परिवहन वित्तीय निगम

iv. ट्रेडिंग में अंतर्निहित गैर-सरकारी, गैर-बैकिंग वित्तीय कंपनियां जैसे- शेयरों, निवेश होल्डिंग, ऋण वित्त, अन्य ऐसे क्रियाकलाप

v. असंगठित गैर-वित्तीय उपक्रम तथा व्यावसायिक साहूकारों व गिरवी रखनेवालों के क्रियाकलाप

vi. डाकघर बचत बैंक जिसमें संबंधित संचयित सामयिक जमा तथा राष्ट्रीय बचत प्रमाणन शामिल है

vii. सहकारी साख सोसायटियां

viii. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन

ix. जीवन तथा गैर-जीवन बीमा क्रिया-कलाप

x. जीवन तथा गैर-जीवन बीमा क्रियाकलाप-दोनों पब्लिक तथा प्राइवेट क्षेत्र की इकाईयां वित्तीय सेवाओं में कार्यरत हैं।

पब्लिक सेक्टर इकाईयों में गैर-विभागीय वाणिज्यिक प्रक्रम (एन.डी.सी.यू) शामिल है जिसमें- (1) सरकारी कंपनियां (जिसमें देय पूंजी का 51 प्रतिशत कम नहीं है, को केंद्र सरकार तथा आंशिक रूप से एक या एक से अधिक राज्य सरकारें प्रयोजित की जाती है) तथा सरकारी कंपनियों की सहायक कंपनिया, तथा (2) स्वायत्त निगम जो संसद या राज्य कार्यकारिणी के विशेष प्रावधानों के तहत स्थापित हैं। एनडीसीयू, डीसीयू से इस प्रकार भिन्न है कि व्यापार में निहित वित्तीय परिसंपत्तियों तथा देनदारियों तथा मूर्त परिसंपत्तियों को व्यवस्थित करते हैं। इन उद्यमों के अपने अलग से निदेशकों के मुख्यालय हैं तथा लाभ-हानि लेखा को प्रस्तुत करते है तथा प्राइवेट कॉरपरेट सेक्टर होने की स्थिति में बैलेंस शीट प्रस्तुत करते हैं।

3.22 बैंकिंग उद्यम खातों को बनाए रखने के रूप में अपने ग्राहकों को सेवाएं मुहैया कराता है तथा उन्हें बैकिंग सेवाएं भी प्रदान करता हैं। इन सेवाओं के बदले में ग्राहकों को एक मामूली राशि देनी पड़ती है जो वस्तुतः बैकिंग उद्यमों के व्ययों से कम होती है। दूसरी ओर बैंक कर्ज तथा अग्रिम राशि मुहैया कराती है तथा वापसी में ऐसी लेन-देनें जमाकर्ताओं द्वारा की गई राशियों से उच्चतर होती हैं। यह निवल वापसी जो बैंक को होती है अपने खर्चों को पूरा करने तथा लाभ कमाने के लिए अधिक पर्याप्त होती हैं।

वाणिज्यिक बैंक

3.23 वाणिज्यिक बैंक जमा के जुटाव तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के साख के वितरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसमें सरकारी तथा प्राइवेट सेक्टर के सभी वाणिज्यिक बैंक शामिल हैं।

आरबीआई का बैंकिंग विभाग

3.24 रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में दो विभाग हैं- बैंकिंग विभाग तथा इश्यू विभाग। आरबीआई के इश्यू विभाग के कार्य सरकारी विभाग की तरह होते है तथा इसी कारण इसे केंद्र सरकार के प्रशासनिक विभाग के रूप में समझा जाता है तथा आरबीआई की शेष वित्तीय कार्यकलाप बैंक विभाग के अधीन माने जाते हैं। आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट इश्यू तथा बैंकिंग विभाग की अलग से बैलेंस शीट प्रस्तुत करती है जहां दोनो विभागों के लाभ-हानि लेखा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं। आय तथा व्यय पर डाटा राष्ट्रीय लेखा उद्देश्य के लिए अंक तथा बैकिंग विभागों के लिए अलग से आरबीआई द्वारा संग्रहित किए जाते है।

पब्लिक गैर-बैकिंग वित्तीय निगम

3.25 इन उद्यमों का निर्माण केंद्र तथा राज्य सरकार वित्तीय निगम अधिनियम 1951 के अंतर्गत हुआ है, जैसे- नाबार्ड, यूटीआई, आईडीबीआई, ओआईडीबी, एसआईडीबीआई, ईएक्सआईएम, बैंक तथा एस.एफ.सी आदि, असम वित्तीय निगम, पश्चिम बंगाल निगम, राजस्थान वित्तीय निगम आदि।

गैर-बैकिंग वित्तीय कंपनियां

3.26 निधि का स्थानांतरण उधारदाताओं से लेन-दारों को करने में गैर-बैकिंग वित्तीय कंपनियों की भूमिका को अच्छी तरह से पहचान लिया गया है। इन कंपनियों के मुख्य लाभ उनके प्रचालनों के लेन-देन लागत, उनके त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, ग्राहक अभिविन्यास तथा सेवाओं का त्वरित विधान से होते है। इन लाभों के कारण, आंशिक रूप से एन.बी.एफ.सी के पास मौजूदा वर्षों का विस्तृत दोनों अंक (संख्या के हिसाब से) तथा व्यापार लेन-देन का अंक है।

सरकारी गैर-वित्तीय कंपनियां

3.27 ये सरकारी कंपनिया हैं जिसमें केंद्र सरकार/राज्य सरकार अथवा आंशिक रूप से केंद्र सरकार द्वारा तथा आंशिक रूप से एक से अधिक राज्य सरकारों व सरकारी कंपनियों द्वारा लागू किया गया 51 प्रतिशत देय राजस्व है । ये वित्तीय कंपनियां शेयर में ट्रेडिंग, प्रतिभूति होल्डिंग में निवेश करना, वित्तीय ऋण तथा अनेक ऐसे क्रियाकलाप जैसे- विद्युत वित्त निगम, औद्योगिक वित्त निगम

(आई.एफ.सी.आई), भारतीय रेलवे वित्तीय निगम (आईआरएफसी), शहरी आवास विकास निगम (हुडको) तथा राज्य कंपनियां जैसे- गुजरात औद्योगिक निवेश निगम, असम राज्य फिल्म वित्त तथा विकास निगम आदि जैसे कार्यों में लगी होती है।

गैर-सरकारी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनजीएनबीएफसी)

3.28 ये गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां निजी सेक्टर में कंपनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत पंजीकृत होती है। भारतीय औद्योगिक साख निवेश निगम (आईसीआईसीआई) तथा वित्तीय आवासीय विकास निगम (एच.डी.एफ.सी) इस समूह के प्रमुख दावेदार हैं। आईसीआईआई जब से बैंक में परिवर्तित हुआ है तब से वाणिज्यिक बैंकों के समूह में आ गया है। एनजीएनबीएफसी के अंतर्गत शेयर ट्रेडिंग निवेश होल्डिंग कंपनियां, लोन फाइनेंस करने वाली कंपनियां, किराया-खरीद वित्तीय कंपनियां, वित्तीय पट्टे वाली कंपनियां तथा अन्य गैर-बैंकिंग कार्य-कलापों में अन्य कंपनियां शामिल हैं।

डाकघर बचत बैंक

3.29 डाकघर बचत बैंक एक डीसीयू है जो बैंकिंग सेक्टर की प्रत्येक आर्थिक क्रियाकलाप से सम्मिलित है। डाक विभाग के बैंकिंग क्रियाकलाप डाकघर बचत बैंक, संचयन समय, जमा लेखा तथा राष्ट्रीय बचत प्रमाणन को सम्मिलित करता है।

सहकारी ऋणदाता समितियां

3.30 अर्थव्यवस्था की विभिन्न सेक्टरों में कम ऋण लेनेवालों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए सहकारी ऋणदाता समितियां मुख्य भूमिका अदा करती हैं। 31 मार्च 1999 को लगभग 146 मिलियन सदस्यता वाली लगभग 1.37 लाख से अधिक सहकारी ऋणदाता समितियां थी। सहकारी ऋणदाता समितियों की कारक आय का विवरण भारत में सहकारी आंदोलन से संबद्ध प्रकाशन सांख्यिकी कथनों से प्राप्त किए जाते हैं, अंक 1- नाबार्ड द्वारा प्रकाशित ऋणदाता कंपनियां।

बीमा क्षेत्र

3.31 बीमा कंपनी का उत्पादन प्रीमियमों तथा योगदानों की रसीदों की अदला-बदली के संबंध में दावों तथा हितलाभों के वेतनमानों को व्यवस्थित करने में उनके द्वारा मुहैया कराए गए सेवा के मूल्य को प्रस्तुत करता है। बीमा उद्यमों के मामले में बीमा क्षेत्र प्रीमियम आय के मुख्य स्रोत का निर्माण करता है। वे निवेश (संपत्ति आय-ब्याज व लाभांश) से आय प्राप्त करते है। बीमा कार्य के उत्पादन के मूल्य लेखा में आकलित किया जाता है, (क) अर्जित वास्तविक प्रीमियम, (ख) बीमा रिजर्व

निवेश से प्राप्त आय (प्रीमियम पूरकों के समकक्ष) , (ग.) न्यून दावे जो लेखाकरण अवधि के दौरान पेमेंट के लिए शेष है (घ.) एक्ट्यूरल रिजर्व न्यून परिवर्तन लाभ बीमा हेतु आरक्षित है। आम बीमा के मामले में लगाए गए सेवा अधिभार प्रीमियम प्लस ब्याज तथा कम कम व्यय पर अर्जित लाभांश जो अदा किए गए दावों के कारण लेखा पर रसीदों के रूप में मापे जाते हैं।

3.32 बीमा से जुड़ी संस्थानिक इकाईयां पूर्व विशिष्ट बीमा कंपनियों तथा निगम हैं। अब तक हाल ही में बीमा क्षेत्र में सरकार का एकाधिकार था और निम्नांकित संस्थानिक इकाईयां है जो पूर्णरूपेण बीमा सेवाएं हैं जिनके नाम है- जीवन तथा गैर जीवन (सामान्य) बीमा (दोनों कोटियों सहित)।

क. बीमा निगम में जीवन बीमा निगम तथा डीक जीवन बीमा, सामान्य/गैर-जीवन बीमा, भारतीय सामान्य जीवन बीमा निगम तथा इसकी सहायिकाएं शामिल है।

ख. जमा बीमा तथा भारतीय साख गारंटी निगम लिमिटेड तथा,

ग. आयात साख तथा भारतीय साख गारंटी निगम लिमिटेड

3.33 कवरेज के अंतर्गत डाक जीवन बीमा तथा कर्मचारी राज्य बीमा योजना शामिल है। बीमा क्षेत्र के प्राइवेट होने के साथ अनेक प्राइवेट बीमा कंपनियां जीवन तथा गैर-जीवन दोनों व्यापार जीवन बाजार में प्रवेश ले चुके हैं जो बीमा नियामक विकास प्राधिकरण (आईआरडीए) द्वारा संचालित है। प्राइवेट सेक्टर की कंपनियां 2001-02 से बीमा क्षेत्र के व्यवस्थित क्रियाकलापों के अलावा, बीमा प्रतिनिधियों के असंगठित बीमा क्रियाकलाप को स्थापित करते हैं तथा ये राष्ट्रीय लेखों के अंतर्गत सम्मिलित किए जाते हैं।

ग. <u>गैर-वित्तीय निगम</u>

3.34 ये मुख्य रूप से बाजारी माल तथा गैर-वित्तीय सेवाओं के उत्पादन में लगे रहते हैं। इनमें गैर-वित्तीय उपक्रम/केंद्र व राज्य संघ क्षेत्रों के उपक्रम व उद्योग समूह कृषि, वनीकरण तथा कटाई, फिशिंग, खनन, निर्माण, विद्युत तथा गैस, सड़क-वायु तथा जल परिवहन जिसमें पोर्ट ट्रस्ट, भंडारण तथा वेअर हाउसिंग, व्यापार, होटल तथा रेस्टोरेंट व अन्य सेवाएं आदि शामिल है। प्राइवेट कॉरपरेट सेक्टर जिसमें संयुक्त स्टॉक कंपनियां जो कंपनी अधिनियम 1956 तथा सहकारी समितियों (वे अन्य जो वित्तीय निगमों द्वारा सम्मिलित किए जाते हैं) के अंतर्गत पंजीकृत हैं।

3.35

घ. <u>पारिवारिक (एन.पी.आई.एस.एच) सेक्टर</u>

3.36 विवरणिका में लेखों के संचयन के उद्देश्य हेतु एसएनए 1993 पारिवारिक क्षेत्र के संस्थानिक क्षेत्र तथा एन.पी.आई.एस.एच के संस्थानिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, जिसे पारिवारिक क्षेत्र

(एनपीआईएसएच सहित) के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र एनएएस के अंतर्गत असंगठित सेक्टर के कवरेज का विवरण सीएसओ प्रकाशन में देता है। राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकीः स्रोत तथा निधियां, 2007

(4.) बुनियादी कीमतों पर सकल पारिवारिक उत्पाद

3.37 संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के द्वारा राष्ट्रीय लेखा प्रणाली के अंगीकरण होने के साथ सदस्य राष्ट्र लेखाकरण बनावट तथा इसके अंतर्गत स्वीकृत संरचना का अनुकरण करते हुए अपनी राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी तैयार करने तथा प्रस्तुत करने के लिए अपेक्षित है। एक सिफारिश कारक कीमत के बजाए उत्पादकों की कीमत अथवा आधार दर पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के प्रस्तुतीकरण से संबंधित है।

3.38 राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के मौजूदा अनुक्रमों में जीडीपी उद्योग के अभ्युदय द्वारा कारक लागत पर संकलित की जा रही है। कारक कीमत पर जीडीपी का अर्थ है- आय की राशि उत्पादन के कारकों से प्राप्त की जाती है जिनके नाम हैं- भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यमी। कोई भी आय कर- रहित छूट (प्रत्यक्ष) के रूप में उत्पादन प्रक्रिया के दौरान सरकार को प्राप्त होती है जो उद्योग स्तर पर जीडीपी के रूप में गिना नहीं जाता।

3.39 कारक लागत जीडीपी पर जीडीपी में कम छूट के साथ अप्रत्यक्ष कर को जोड़ते हुए हेतु बाजार कीमतों पर जीडीपी प्राप्त की जाती है। जीडीपी के अनंतिम प्रयोगों पर व्यय के घटकों का स्वतंत्र रूप से आकलन किया जाता है।

1. सरकार अंतिम अवक्षय
2. प्राइवेट अंतिम अवक्षय
3. पूंजी निर्माण
4. मालों तथा सेवाओं का निवल आयात

जीडीपी में अंतर उत्पादन तथा व्यय की तरफ से सांख्यिकी विसंगति के रूप में व्यवहरित होती है।

बुनियादी कीमतों पर जीडीपी का मूल्यांकन

3.40 एसएनए के अनुसार, उत्पादकों द्वारा उत्पादन घटा देय कर के रूप में अच्छी अथवा उत्पादित सेवा इकाई के लिए, साथ ही उत्पादन अथवा विक्रय के परिणामस्वरूप उस इकाई पर प्राप्त सहायिकी के लिए खरीददार से प्राप्त राशि बुनियादी कीमत है। इसके अंतर्गत कोई भी परिवहन अधिभार उत्पादक द्वारा अलग से नहीं जोड़ें जाते हैं। इस प्रकार, बुनियादी कीमत पर जीडीपी

उत्पादन पर छूट तथा कर समावेश करता है। बुनियादी कीमतों पर जीडीपी के संकलन करने के उद्देश्य से, कारक कीमत पर उत्पादन कर तथा छूटों पर जीडीपी समायोजित की जाती है। अप्रत्यक्ष कर को उत्पाद तथा उत्पादन करों के आकलनों को द्विभाजित करने के लिए किया जाता है। उत्पाद करों के अंतर्गत उत्पाद, सेवा कर, शुल्क तथा विक्रय कर शामिल हैं। स्टंप शुल्क तथा अन्य कर उत्पादन कर के रूप में व्यवहरित किए जाते हैं। भू-राजस्व भी उत्पादन कर के रूप में व्यवहरित किया जाता है। इस प्रकार उत्पादन कर का आकलन कर विभिन्न सेक्टरों तथा उद्ययोगों में उनके आकलित निवल पूंजी स्टॉक के अनुपात में आवंटित किया जाता है। छूटों का आकलन बजट दस्तावेज़ से उपलब्ध होते हैं। इसके अंतर्गत उत्पाद तथा उत्पादन छूट शामिल हैं। कोई भी प्रत्यक्ष डाटा उत्पादन छूट व उद्योगवार उत्पादन छूट जो पब्लिक उद्यम लेखा के विश्लेषण से प्राप्त होती है, के लिए उपलब्ध नहीं है। यह अवक्षय पर कुल अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन छूट के रूप में उपयोग की जाती है, यहां उत्पादन पर छूट केवल पब्लिक सेक्टर इकाईयों को दी जाती है। उत्पादन कर रहित उत्पादन छूटों के उद्योगवार आकलन कारक लागत तथा बुनियादी कीमतों पर जीडीपी के आकलन को प्राप्त करने के लिए उद्योग द्वारा जीडीपी के आकलन में जोड़ दिया जाता है।

लेखों पर टिप्पणियां

राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी का यह अंक संयुक्त लेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें लेन-देन जैसे लेखें सम्मिलित है, जैसे- माल सेवाएं लेखा तथा लेखा की पूर्ण अनुक्रम आदि, मौजूदा लेखा तथा संचयन लेखा (पूंजी लेखा तथा वित्तीय लेखा) तथा शेष विश्व का लेखा (बाह्य लेन-देन शाखा)। मौजूदा लेखे माल तथा सेवाओं के उत्पादन, उत्पत्ति व आय के वितरण तथा उपयोग दर्ज़ करते है। संचयन लेखा परिसंपत्तियों, अदायगियों तथा निवल आय के परिवर्तन को देखता है, जबकि विश्व के शेष लेखा उन कोटियों के लेखों से संबंधित है जो पूर्ण क्षमता वाले लेन-देनों को ग्रहण करने के लिए कुल अर्थव्यवस्था तथा शेष विश्व के मध्य स्थान ग्रहण करते हैं।

कुल अर्थव्यवस्था के लिए संयुक्त लेखा

लेखा 0- माल तथा सेवा लेखा

माल तथा सेवा लेखा के बीच बुनियादी संबंध नीचे दिया गया है-

उत्पाद + निर्यात = मध्यवर्ती अवक्षय
+ अनंतिम अवक्षय
+ सकल पूंजी निर्माण
+ निर्यात

माल तथा सेवा लेखा (लेखा 0) समग्र रूप से अर्थव्यवस्था के लिए कुल संसाधन, उत्पादन तथा निर्यात (एस-75) तथा माल व सेवाओं का उपयोग आदि मध्यवर्ती अवक्षय, अनंतिम अवक्षय व्यय (एस-5), कुल स्थायी पूंजी निर्माण (एस-5), माल सूचियों में परिवर्तन (एस-5), अधिग्रहण रहित बहुमूल्यों के उत्पत्ति (एस-5) तथा आयात (एस-75) प्रदर्शित करता है। कम सहायिकी के साथ उत्पादों पर कर भी लेखा के संसाधन हिस्से में शामिल किए जाते है। केवल उत्पादों पर कर कुल अर्थव्यवस्था के स्तर पर रिकॉर्ड की जाती है। उत्पादन आकलन में बाजार उत्पादन, गैर-बाजार उत्पादन तथा स्व-अनंतिम उपयोग के लिए प्रस्तुत किए जाते है। उत्पादन का आकलन सभी आर्थिक गतिविधियों के लिए तैयार किया जाता हैं तथा उसे अर्थव्यवस्था के लिए संक्षिप्त किया जाता हैं।

लेखा 1- उत्पादन लेखा

उत्पादन लेखा में बुनियादी संबंध निम्नलिखित है-

उत्पादन = मध्यवर्ती अवक्षय

+ मूल्य संवर्धन

संतुलनकारी मद (मूल्य संवर्धित) उत्पादन से मध्यवर्ती अवक्षय को घटाकर प्राप्त किया जाता है। मूल्य संवर्धन स्थायी पूंजी का (सी.एफ.सी) (एस-1) निवल अवक्षय (एस-1 का मद 6 व 7) हो सकता है।

लेखा II.1.1 आय उत्पत्ति लेखा

आय लेखा के उत्पादन में बुनियादी संबंध निम्नलिखित है

मूल्य संवर्धित= कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति
+ उत्पादन में अन्य कर रहित छूट
+ प्रचालन लाभ

आय उत्पत्ति लेखा उत्पादकों के नजरिये को दर्ज़ करता है कि किस प्रकार मूल्य संवर्धन श्रम, पूंजी तथा सरकार में किस प्रकार उत्पादन पर कर द्वारा तथा आयात रहित छूटों द्वारा वितरित की जाए। मूल्य संवर्धन (एस-1 की मद-7) तथा संतुलनकारी मद उत्पादन लेखा में अग्रसित किया जाए जो उत्पादक के लिए व्यवहरित किए जाते है। श्रमिक वेतनमान, कर्मचारियों के प्रतिपूर्ति के रूप में (सीई) (एस-76.1 का मद 10), उत्पादन तथा निर्यात पर कर रहित छूट के रूप में प्रतिपूर्ति। उत्पादन के कर पर माल तथा सेवाओं पर देय कर उत्पादित तथा मुहैया कराया जाता हैं उसे विक्रय तथा स्थानांतरित किया जाता हैं अथवा उत्पादन पर उत्पादक जोड़कर अन्य कर के साथ निरसित किया जाता है। यह कर स्वामित्व पर मुख्य रूप से लगते हैं अथवा भूमि के उपयोग, भवन तथा अन्य परिसंपत्तियां, जो उत्पादन में प्रयुक्त हुई है अथवा नियोजित श्रम पर तथा अदा किए गए कर्मचारी प्रतिपूर्ति पर लगता है। इस लेखा में संतुलनकारी मद एक प्रचालित लाभ स्थायी आय है। एस-76.1 में प्रदर्शित ओएस/एमआई अंकों के मध्य अंतर तथा लेखा में प्रस्तुत है जो कि उत्पादन कर के रूप में भू-की प्रकृति शामिल है।

लेखा II.1.2- प्राथमिक आय आवंटन का लेखा

प्राथमिक आय आंवटन लेखा में बुनियादी संबंध नीचे है-

प्राथमिक आयों का संकलन= प्रचालन लाभ
+ प्राप्त संपत्ति आय
– देय संपत्ति आय

सरकार के संबंध में उत्पादन तथा आयात पर कम सहायिकी के साथ पारिवारिक तथा पावतियां कर के मामले में प्राथमिक आयों का संतुलन (एस-1 की मद 9) कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति की पावंतियां भी शामिल करता है। कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (एस-76.1 की मद 10 तथा एस-75 की मद 6.2 घटा मद 6.8), में गैर-आवासीय सेक्टर से प्राप्त प्राप्य भी शामिल है। संपत्ति आय (एस-75 की मद 6.3), गैर-आसावीस सेक्टर से प्राप्य है तथा शेष विश्व में देय है, से संबंधित है (एस 75 की मद 6.9)।

लेखा II.2- द्वितीयक आय वितरण का लेखा

द्वितीयक आय वितरण का लेखा में बुनियादी संबंध है-

प्रयोज्य आय = प्राथमिक आयों का संतुलन
+ प्राप्त मौजूदा स्थानांरण
– देय मौजूदा स्थानांतरण

द्वितीयक आय वितरण लेखा में लेखा का संसाधनिक पक्ष मौजूदा स्थानांतरण तथा प्राथमिक आय दर्ज़ करता है (आय लेखा का आवंटन अग्रसीत किया गया है)। नकद में मौजूदा स्थानांतरण निम्नांकित दर्शाया गया है- आय, धन पर मौजूदा कर आदि (भू-राजस्व के अतिरिक्त एस-43 की मद 8), सामाजिक योगदान तथा लाभ, मौजूदा स्थानांतरण (एस-43 की मद 4.2), अन्य शेष विश्व से स्थानांतरण (एस-43 की मद 10)। यथावत प्रकार नकद मौजूदा स्थानांतरण इस समय शेष विश्व के मौजूदा स्थानांतरण (एस-75 की मद 10) को देय था तथा इसे लेखा के उपयोग वाले पक्ष पर दर्ज़ किया जाता हैं। ये क्षेत्रों में व्याप्त होती है जिनके लिए ये स्थानांतरण देय होते है। लेखा प्रयोज्य आय का मापन करता है (एस-1, एस-4) जो लेखा की संतुलनकारी मद है, वह उपयोग वाले पक्ष की ओर दर्शाईं गई है।

लेखा II.3 वस्तु रूप में आय पुनर्वितरण का लेखा

वस्तु रूप में आय पुनर्वितरण लेखा आय वितरण की प्रणाली में होता है। आय पुनर्वितरण लेखा में बुनियादी संबंध है-

समायोजित प्रयोज्य आय= प्रयोज्य आय
+ एक प्रकार का प्राप्त सामाजिक स्थानांतरण
– एक प्रकार का देय सामाजिक स्थानांतरण

सरकारी इकाईयों द्वारा वस्तु रूप में देय सामाजिक स्थानांतरण को उपयोग के आधार पर वस्तु रूप में आय पुनर्वितरण लेखा की बायीं तरफ दर्ज़ किया जाता है। पारिवारिक सेक्टर द्वारा प्राप्त यथा प्रकार के

सामाजिक स्थानांतरण को संसाधनों के अंतर्गत दाएं पक्ष वाले लेखा पर दर्ज किया जाता है। लेखा का संसाधनिक पक्ष प्रयोज्य आय को दर्ज़ करता है (आय लेखा के द्वितीयक वितरण से अग्रसित किया गया है)। यह मानते हुए कि एक प्रकार का सामाजिक स्थानांतरण आवासीय इकाईयों के बीच केवल उपयोग किए जाते है, एक प्रकार का कुल स्थानांतरण मूल्य जो आवासीय पारिवारिक वस्तुओं से प्राप्त होती है तथा उन सरकारी इकाईयों द्वारा कुल देय मूल्य के समतुल्य होना चाहिए। यह लेखा समायोजित प्रयोज्य आय का मापन करता है जो लेखा की संतुलनकारी मद होती है जो उपयोग वाले पक्ष की ओर प्रदर्शित की जाती है। कुल अर्थव्यवस्था के लिए समायोजित प्रयोज्य आय प्रयोज्य आय के समान होती है। चलन में समायोजित प्रयोज्य आय की अवधारणा मुख्य रूप से सरकारी इकाईयों तथा पारिवारिक चीजों पर संगत होती है, समायोजित प्रयोज्य आय तथा प्रयोज्य आय के मध्य विशिष्टता समग्र रूप से अर्थव्यवस्था के स्तर पर असंगत है।

लेखा II.4.I प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

प्रयोज्य आय लेखा के उपयोग में बुनियादी संबंध है-

बचत = प्रयोज्य आय

– अनंतिम अवक्षय व्यय

प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग संसाधनिक प्रयोज्य आय को प्रदर्शित करता है जो आय लेखा के द्वितीयक वितरण से अग्रसीत की जाती है। अनंतिम अवक्षय व्यय (एस-1) उपयोग वाले पक्ष पर दर्ज़ किए जाते है। सांख्यिकीय विसंगति (एस-6) यहां प्रदर्शित की गई है। लेखा की संतुलनकारी मद बचतें (एस-1) हैं।

लेखा II.4.2 समायोजित प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

बचत = समायोजित प्रयोज्य आय

– वास्तविक अनंतिम अवक्षय व्यय

समायोजित आय लेखा का उपयोग संसाधनों के अंतर्गत दर्शाता है, समायोजित प्रयोज्य आय जो आय लेखा के पुनःवितरण से अग्रसीत की जाती है। वास्तविक अनंतिम अवक्षय व्यय (एस-1) उपयोग पक्ष की ओर दर्ज़ किया जाता है। सांख्यिकीय विसंगति (एस-6) यहां प्रदर्शित की गई है। लेखा की संतुलनकारी मद (एस-1) अनुक्रम में अगले लेखे में प्रतिबिंबित होती है, जैसे- पूंजी लेखा।

पारिवारिक अवक्षय का वास्तविक अवक्षय वस्तु रूप में प्राप्य सामाजिक स्थानांतरण के मूल्य द्वारा अनंतिम अवक्षय व्यय के संवर्धन द्वारा प्राप्त किया जाता है जबकि सरकारी इकाईयों के लिए वस्तु रूप में देय अपने अनंतिम अवक्षय व्यय सामाजिक स्थानांतरण द्वारा घटाकर प्राप्त किया जाता है। आय लेखा के उपयोग के दो संस्करण श्रांखलिक अथवा पैतृक नहीं है। वे समानांतर लेखा है जो विभिन्न विश्लेषणात्मक अथवा नीतिगत उद्देश्यों का अनुकरण करते हैं।

III. संचयन लेखा

लेखा- III.I पूंजी लेखा

पूंजी लेखा में बुनियादी संबंध नीचे दर्शाया गया हैः-

बचत तथा पूंजी स्थानांतरण के दौरान निवल आय में परिवर्तन = कुल स्थायी पूंजी निर्माण
– स्थायी पूंजी का अवक्षय
+ अन्य गैर वित्तीय परिसंपत्तियों का अधिग्रहण रहित उत्पत्ति
+ निवल लेन-दारी

पूंजी लेखा बाएं तरफ परिसंपत्तियों को दर्ज़ करता है, अदायगियां तथा निवल आय दाएं तरफ होती है। दाहिनी आय का लेखा संचयित परिसंपत्तियों को संसाधन उपलब्ध कराता है। इनमें निवल बचतें शामिल हैं- (एस-1), तथा संतुलन मद आय लेखा तथा पूंजी स्थानांतरण के उपयोग से दूसरे लेखा में दर्ज़ कर दी जाती है (एस-75 का 6.14)। पूंजी देय स्थानांतरण नकारात्मक चिह्न के साथ दिखाया गया है। लेखा का बायां पक्ष कुल पूंजी निर्माण के मूल्यों पर प्रविष्ट होता है (एस-20), सीएफसी।

पूंजी लेखा में संतुलनकारी मद जो निवल उधार देने वाले (+) / निवल उधार लेने वाली (-) (एस-75 की मद 6.15) लेखे के बाएं पक्ष में दिखाई गई है।

लेखा III.2 वित्तीय लेखा

वित्तीय लेखा में बुनियादी संबंध निम्नलिखित है-

निवल उधारी = वित्तीय परिसंपत्तियों का निवल अधिग्रहण

- लेनदारियों की निवल देयता

वित्तीय लेखा लेन-देन को दर्ज़ करता है जो वित्तीय परिसंपत्तियों तथा लेन-दारियों में लगे रहते है तथा जो संस्थानिक इकाईयों तथा शेष विश्व के मध्य काम करते है। प्रणाली के अंतर्गत ये लेन-देन वित्तीय परिसंपत्तियों का बाएं हाथ के पक्ष अथवा दाएं हाथ के निवल लेन-दारियों की उधारी (एस-75 की मद 6.16) प्रदर्शित करता है। संतुलनकारी मद निवल देने वाली उधारी (+) अथवा निवल लेन वाली उधारी (-) (एस-75 की मद 6.15) है जो दाएं पक्ष की ओर दिखाई देती है।

लेखा V.1 शेष विश्व का लेखा (बाह्य संचालन लेखा)

शेष विश्व का लेखा, सामान्य लेखा ढ़ांचा का अनुकरण करता हुआ कम अन्तर के साथ पूर्ण क्षमता वाले संचालनों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक लेखों की कोटियों का समावेश करता है। (एस-8, एस-75) जो कुल अर्थव्यवस्था तथा शेष विश्व के मध्य स्थान ग्रहण करता है।

संस्थानिक सेक्टर लेखा

आय का उत्पादन तथा उत्पत्ति

इस विभाग में लेखा आय के उत्पत्ति तथा प्रयोज्य को प्रस्तुत करने के लिए एक प्रयास किया गया है जो सीएसओ के राष्ट्रीय लेखा प्रभाग (एनएडी) के आधार पर विभिन्न संस्थानिक सेक्टरों के लिए एसएनए 93 द्वारा लागू किया गया है। वर्तमान में एनएडी अभ्युदय उद्योग तथा अर्थव्यवस्था के संगठित व असंगठित क्षेत्रों द्वारा कारक आय, जीडीपी तथा एनडीपी के आकलन को संकलित करता है। समान डाटा स्रोत, प्रणाली तथा कवरेज इन लेखों को तैयार करने में प्रयुक्त है। एनएएस (राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी, भारत) में कुल अर्थव्यवस्था को संगठित तथा असंगठित खंडो में विभाजित कर दिया गया है। इन लेखों में असंगठित क्षेत्र पारिवारिक क्षेत्र के रूप में व्यवहरित किया जाता है तथा संगठित क्षेत्र को सरकारी, वित्तीय निगमों तथा गैर-वित्तीय निगमों के रूप में विभक्त किया जाता है।

वित्तीय निगम (बैंकिंग तथा बीमा सेक्टर)

लेखा I- उत्पादन लेखा

उत्पादन का आकलन संसाधन पक्ष में प्रदर्शित किया गया है। उपयोग वाले पक्षों में मध्यवर्ती अवक्षय, कुल तथा निवल मूल्य परिवर्धन तथा स्थायी पूंजी अवक्षय (सीएफसी) शामिल होते हैं।

लेखा II.I.I आय उत्पत्ति लेखा

मूल्य संवर्धन तथा संतुलनकारी मद उत्पत्ति लेखा से लाई गई है, जो संसाधन पक्ष की ओर दिखाई गई है। उपयोग के तहत कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (सीई) (एस-76.1 की मद 8.1) तथा उत्पादन पर अन्य कर शामिल है। इस लेखा में संतुलनकारी मद एक प्रचालन लाभ (एस-76.1 की मद 8.1) है।

गैर-वित्तीय निगम

इस क्षेत्र के लेखे जो अवशिष्ट के रूप में पहुंच गए है वह कुल अर्थव्यवस्था के लेखे, पारिवारिक सेक्टर, आम सरकारी सेक्टर तथा वित्तीय निगम जैसे है जो अलग-अलग संकलित किए गए हैं।

आम सरकार के लिए लेखों का अनुक्रम

एसएनए डाटा द्वारा दिए गए मार्गदर्शन पर आधारित, देश में व्याप्त होने वाला संस्थानिक ढ़ाचे के क्रियाकलाप को ध्यान में रखते हुए, सरकारी सेक्टर निम्नलिखित समूहों में वर्गीकृत हैः

क. सरकारी सेवाओं के उत्पादक जैसे- सरकार के प्रशासनिक विभाग
ख. विभागीय उद्दम जैसे- रेलवे, संचार तथा अन्य विभागीय उद्दम

लेखा I- उत्पादन लेखा

उत्पादन आकलन (एस-37, 38, 39, 40 में उत्पादन की राशि दी गई है तथा स्व-लेखा पूंजी निर्माण), संसाधनों के पक्ष में मौजूद होते हैं जिसमें बाजार उत्पादन, स्व-उपयोग के लिए उत्पादन (एस-43) आदि हैं। संतुलनकारी मद (मूल्य संवर्धित), मध्यवर्ती अवक्षय के उत्पादन में (एस 37,38,39,40 में दिए गए मध्यवर्ती अवक्षय की राशि उत्पादन के अन्य करों में समायोजित की जाती है) घटाकर प्राप्त किया जाता है। मूल्य संवर्धित स्थायी पूंजी अवक्षय का कुल अथवा निवल हो सकता है, एस 37,38,39,40 में दी गई सीएफसी की राशि।

लेखा II.I.I आय उत्पत्ति लेखा

मूल्य संवर्धित तथा संतुलनकारी मद उत्पादन लेखा के द्वारा अग्रसीत किया जाता है। उपयोग के तहत कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (सीई) (एस-37,38,39,40 में दिए गए सीई की राशि) तथा उत्पादन पर अन्य

कर शामिल है। इस लेखा में संतुलनकारी मद एक प्रचालन लाभ है (एस-37,38,39,40 में दी गई ओएस की राशि)।

लेखा II.1.2 प्राथमिक आय आवंटन का लेखा

इस लेखा में संसाधनों के अंतर्गत प्रदर्शित मदें प्रचालन लाभ है जो आय लेखों के प्रयोज्य से लाई जाती है। उत्पादन तथा निर्यात में कर शामिल होते हैं (एस-1 की मद-5)। प्राप्त संपत्ति आय (एस-43 की मद 702) शामिल होती है। उपयोग होने वाले पक्ष में आय संपत्ति के कारक में पब्लिक कर्ज पर मिलने वाला ब्याज (एस-43 की मद 2), किराया (एस-39 की मद 3.1) तथा ब्याज (एस-39 की मद 3.2) देय तथा वितरित संपत्ति आय (एस-41 की मद 1 तथा एस-42 क मद 1) शामिल होता है।

लेखा II.2 द्वितीयक आय वितरण का लेखा

द्वितीयक आय आवंटन लेखा में संसाधनों का पक्ष आय तथा धन पर मौजूदा (एस-43 की मद 8.3), सामाजिक योगदान, अन्य मौजूदा स्थानांतरण (एस-43 की मद 10) तथा प्राथमिक आय का संतुलन (प्राथमिक आय लेखा का आवंटन लाया गया), नकद में यथावत मौजूदा स्थानांतरण पर कर दर्ज़ करता है। इस समय यह (एस-43 की मद 4 की राशि, एस 41 की मद 3 तथा एस-42 की मद 3) लेखा के उपयोग वाले पक्ष की ओर दर्ज़ किए जाते है। लेखा प्रयोज्य आय का मापन करता है जो लेखा की संतुलनकारी मद होती है तो उपयोग किए जाने वाले पक्ष की ओर प्रदर्शित की जाती है।

लेखा II.3 वस्तु रूप में आय पुनर्वितरण का लेखा

सरकारी इकाईयों द्वारा वस्तु रूप में देय सामाजिक स्थानांतरण उपयोग किए जाने पर वस्तु रूप में आय लेखों में बाएं हाथ वाले पक्ष का पुनःवितरण पर दर्ज़ किया जाता है। लेखा का संसाधनिक पक्ष प्रयोज्य आय को दर्ज़ करता है (जो आय लेखा के द्वीतियक वितरण से लाई जाती है)। लेखा समायोजित प्रयोज्य आय का मापन करता है तथा लेखा की संतुलनकारी मद होती है तथा उपयोग वाले पक्ष पर प्रदर्शित की गई है।

लेखा II.4.I प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

उत्पत्ति संसाधन के अंतर्गत प्रदर्शित होता है जो आय लेखा के द्वितीयक वितरण से लाया गया है। सरकारी अनंतिम अवक्षय व्यय (एस 43 की मद 1) प्रायोगिक पक्ष पर दर्ज किया जाता है। लेखा की संतुलनकारी मद बचते हैं। (एस-41 व एस 42 की मदें 4 की राशि तथा एस-43 की मद 5 की राशि)

लेखा II.4.2 समायोजित प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

समायोजित प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग संसाधनों के अधीन समायोजित प्रयोज्य आय के आय लेखा के पुनर्वितरण से मापी जाती है। वास्तविक अनंतिम अवक्षय उपयोग पक्ष की ओर दर्ज़ किया जाता है। सरकारी इकाईयों के लिए वास्तविक अनंतिम अवक्षय वस्तु रूप में देय अनंतिम अवक्षय व्यय (एस 1) व सामाजिक स्थानांतरण से घटाकर प्राप्त किया जाता है। सांख्यिकीय विसंगति (एस-6) यहां प्रदर्शित की जाती है। लेखा की संतुलनकारी मद बचते हैं (एस-1) जो अनुक्रम में आगामी लेखा के रूप में प्रतिबिंबित होती है।

लेखा III.I पूंजी लेखा

लेखा के उचित पक्ष में निवल बचत शामिल है। आय लेखा के उपयोग से तथा देय (एस-46 की मद 4), व प्राप्य (एस-44 की मद 7 व एस-46 की मद 8) पूंजी स्थानांतरण से लाई जाती है। बाएं पक्ष की लेखा कुल स्थायी पूंजी (एस 44, 45, एस-46 में मद 2 की राशि), माल सूचियों में परिवर्तन (एस 44,45, एस 46 में मद 1 की राशि) गैर-उत्पादित परिसंपत्तियां (एस 44,45,एस 46 की मद 3 की राशि) तथा सीएफसी निर्माण के मूल्यों पर प्रवेश करती है। पूंजी लेखा पर संतुलनकारी मद निवल उधार देने वाली (+)/ निवल उधार देने वाली (-) लेखा के बाएं पक्ष की ओर प्रदर्शित की गई है।

लेखा III.2 वित्त लेखा

वित्तीय परिसंपत्तियों का निवल अधिग्रहण (एस 44 की मद 11) बाएं पक्ष पर प्रदर्शित है अथवा लेनदारियों का निवल ऋण (एस-46 की मद 9 तथा एस 44 व एस 45 की मदें 17 तथा एस 46 की मद 10) बाएं पक्ष पर प्रदर्शित होता है।

पारिवारिक सेक्टर हेतु लेखों का अनुक्रम

प्राइवेट गैर-कॉरपोरेट उद्यम सहित पारिवारिक क्षेत्र अर्थव्यवस्था का असंगठित कारक होता है।

लेखा I- उत्पादन लेखा

उत्पादन के आकलन, असंगठित सेक्टर के सभी आर्थिक गतिविधियों द्वारा बनाए गए संसाधनों में संक्षिप्त करके प्रदर्शित किए गए हैं। उपयोग पक्ष में शामिल है- मध्यवर्ती अवक्षय, निवल तथा निवल मूल्य संवर्धन तथा स्थायी पूंजी का अवक्षय (सी.एफ.सी)।

लेखा II.I.I आय उत्पत्ति लेखा

मूल्य संवर्धन, संतुलनकारी मद उत्पत्ति लेखा से अग्रेषित की जाती है। उपयोग के तहत नियोजकों की प्रतिपूर्ति (सीई) (एस-76.1 की मद 10 बी) तथा उत्पादन पर अन्य कर शामिल है। इस लेखा में संतुलनकारी मद एक प्रचालन लाभ है (एस-76.1 की मद 10 बी)।

लेखा II.1.2 प्राथमिक आय आवंटन का लेखा

इस लेखे में संसाधनों के तहत मदें प्रचालित लाभ होते है जो आय लेखा, कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (एस 76.1 की मद 10 तथा एस 75 की मद 6.2) तथा संपत्ति आय (एस 43 की मद 2, एस 75 तथा एस 76.2 की मद 6.3) से लाई जाती है। प्रायोगिक पक्ष से कर्मचारियों की प्रतिपूर्ति (एस 75 की मद 6.8) तथा शेष विश्व की संपत्ति आय (एस-75 की मद 6.9) सम्मिलित किए जाते हैं। प्राथमिक आय का संतुलन प्रयोज्य पक्ष की ओर दिखाया गया है।

लेखा II.2 द्वितीयक आय आवंटन का लेखा

आय लेखा के द्वितीय आवंटन में लेखा का संसाधनिक पक्ष आय तथा धऩ पर मौजूदा कर (एस-43 की मदें 4.2 तथा एस-75 की मद 6.4 तथा प्राथमिक आय का संतुलन (प्राथमिक आय आवंटन के लेखे से लाया गया है) दर्ज़ करता है। आय तथा धन पर मौजूदा कर (एस-43 में मद 8.3) तथा देय मौजूदा स्थानांतरण (एस-43 की मद 10 तथा एस 75 की मद 6.10) लेखा के प्रायोगिक पक्ष पर दर्ज़ किए जाते है। लेखा की संतुलनकारी मद तथा प्रयोज्य आय (एस-4 की मद 20) में सरकारी निकायों की बचतों का अवक्षय तथा शेष विश्व में मौजूदा स्थानांतरण (एस-43 की मद 4.1) शामिल नहीं है।

लेखा II.3 वस्तु रूप में आय पुनर्वितरण का लेखा

वस्तु रूप में सामाजिक स्थानांतरण संसाधनों के अंतर्गत, वस्तु रूप में पुनर्वितरण आय लेखा के बाएं पक्ष पर परिवारों द्वारा दर्ज़ किए जाते है। लेखा का संसाधनिक पक्ष प्रयोज्य आय को दर्ज़ करता है (द्वितीयक आय वितरण लेखा से अग्रसीत की गई है)। लेखा समायोजित प्रयोज्य आय का मापन करता है जो लेखा की संतुलनकारी मद है जिसे प्रायोगिक पक्ष की ओर दर्शाया गया है।

लेखा II.4.1 प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग को संसाधन प्रयोज्य आय के अंतर्गत दर्शाया गया है जिसे द्वितीयक आय वितरण लेखा से आगे अग्रेषित किया गया है। निजी अंतिम अवक्षय व्यय (एस-6 की मद 3.2) को उपयोग पक्ष की तरफ रिकॉर्ड किया गया है। लेखा की संतुलनकारी मद बचतें (एस 18 की मद 6.1) तथा सांख्यिकीय विसंगति (एस-6 की मद 3.4) हैं।

लेखा II.4.2 समायोजित प्रयोज्य आय लेखा का उपयोग

आय लेखा का समायोजित उपयोग संसाधनों के अंतर्गत समायोजित प्रयोज्य आय दर्शाता है जो आय पुनःवितरण लेखा से प्राप्त होती है। वास्तविक अनंतिम अवक्षय व्यय प्रायोगिक पक्ष पर दर्ज किया जाता है। पारिवारिक वास्तविक अनंतिम अवक्षय व्यय संवर्धित करके वस्तु रूप में प्राप्त सामाजिक स्थानांतरणों से मूल्य द्वारा (एस-1) प्राप्त किया जाता है। सांख्यिकी विसंगति (एस-6) भी यहां प्रदर्शित की गई है। लेखा की संतुलनकारी मद बचत (एस-1) अनुक्रम में आगामी लेखा में प्रतिबिंबित की गई है।

लेखा III.1 पूंजी लेखा

लेखा के दाएं पक्ष में निवल बचतें, संतुलनकारी मद जो आय लेखा के उपयोग से अग्रेषित की गई है शामिल है। लेखा के बाएं पक्ष में सकल स्थायी पूंजी निर्माण (एस-19 का मद 2.3), माल-सूचियों में परिवर्तन (एस-19 की मद 3.3) तथा सीएफसी शामिल है। आय लेखा में संतुलनकारी मद जो निवल उधार देना (+)/ निवल उधार लेना (-) (एस-73 का मद 4) है को लेखा के बाएं पक्ष पर दिखाया गया है।

लेखा III.2 वित्त लेखा

वित्तीय परिसंपत्तियों के निवल अधिग्रहण (एस-73 की मद 1) को बाएं पक्ष तथा लेनदारियों के निवल ऋण (एस-73 की मद 3) को दाएं पक्ष पर दिखाया गया है। संतुलनकारी मद निवल उधार देना (+) अथवा निवल उधार लेना (-) (एस-73 की मद 4) है जिसे बाएं पक्ष पर प्रदर्शित किया गया है।